रामजीवन

समरसता का दर्पण

हिंदी
विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 22-28 March 2026

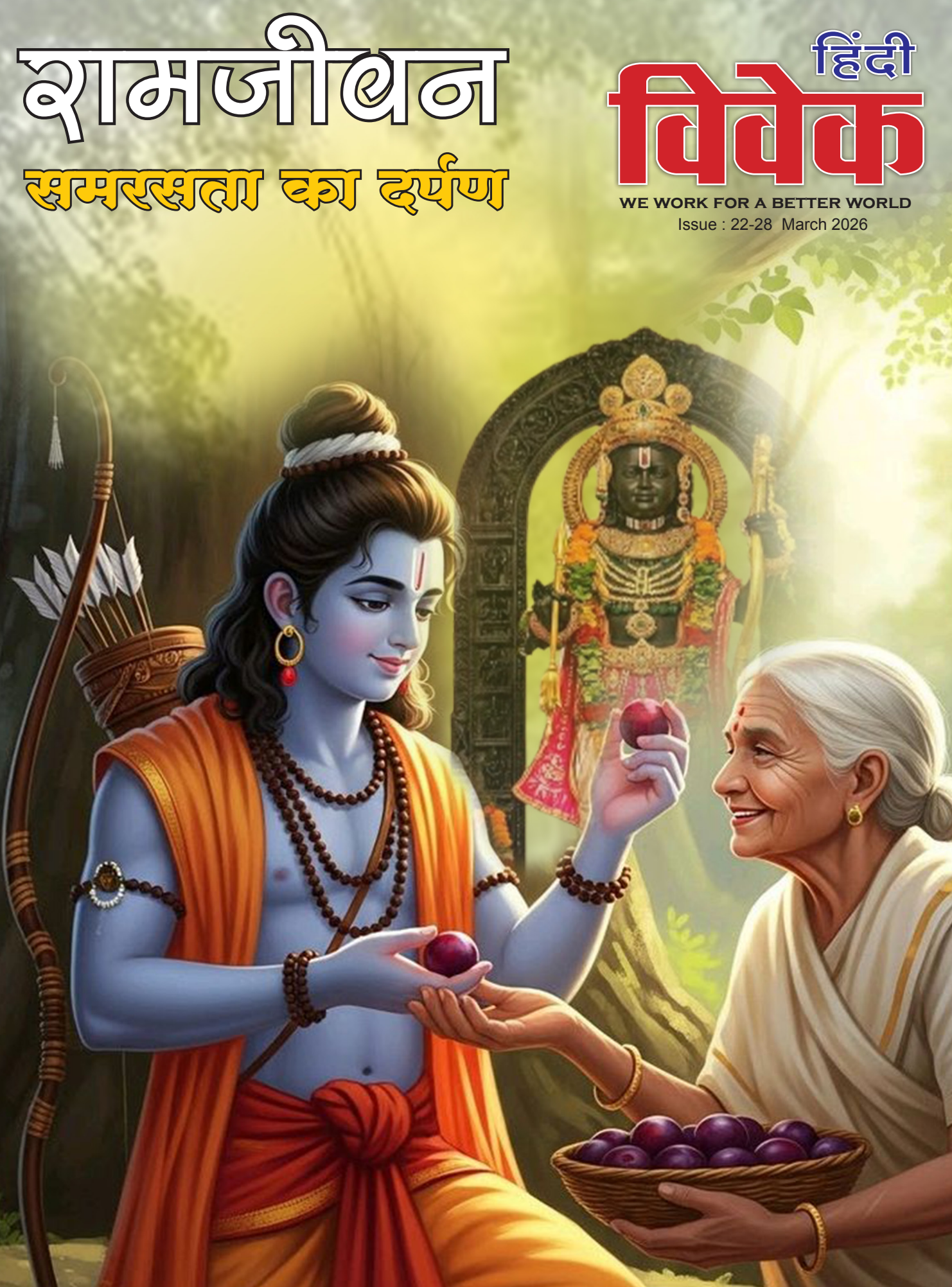

Vipin Aggarwal
THE SAFFRON EXPERT™

केसर तिलक–एक अज्ञात रहस्य

केसर तिलक

केसर तिलक आध्यात्मिकता, परम्परा और स्वास्थ्य का एक सुंदर मिश्रण है। यह शुद्ध और पवित्र गंगाजल के साथ शुद्ध केसर से बना है। तिलक आंतरित ऊर्जा को जाग्रत करने, मन की रक्षा करने, स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और आध्यात्मिक के प्रतीक के रूप में लगाया जाता है।

माथे, गले और नाभि पर केसर तिलक लगाना आयुर्वेद और आध्यात्मिक परम्पराओं में निहित एक प्राचीन प्रथा है। प्रत्येक बिंदू को शरीर में एक शक्तिशाली ऊर्जा केंद्र माना जाता है और केसर स्वयं औषधीय और आध्यात्मिक महत्व रखता है। प्रत्येक क्षेत्र के लाभ इस प्रकार हैं–

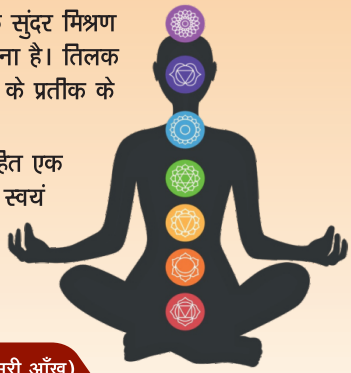

केसर तिलक के अद्भुत लाभ

1. माथा आज्ञा चक्र (तीसरी आँख)
- अंतर्ज्ञान, एकाग्रता और बुद्धि का केंद्र
- ऊर्जा को संतुलित करता है और ध्यान शक्ति बढ़ाता है

2. कान
- सतर्कता, जागरुकता और ग्रहणशीलता का प्रतीक
- कानों के पास केसर तिलक लगाने से श्रवण–एकाग्रता और संतुलन बढ़ता है

3. कंठ–विशुद्धि चक्र
- संवाद कौशल्य, आत्मविश्वास और स्व–अभिव्यक्ति को बढ़ाता है
- स्पष्ट संवाद, आंतरिक सत्य और आत्मविश्वास को सशक्त करता है

4. नाभि
- नाभि को शरीर का ऊर्जा केंद्र माना जाता है
- यहाँ केसर तिलक लगाने से शरीर को पोषिण मिलता है, पचनशक्ति बढ़ाता है और आंतरिक अंगों की रक्षा होती है

ज्योतिष के अनुसार, केसर तिलक बृहस्पति (ज्ञान, धन, आध्यात्मिकता), बुध (बुद्धि, वित्त, संचार), केतु (बोध, अंतर्ज्ञान, शांति) और मंगल (साहस, शक्ति) की ऊर्जा को संतुलित करता है। प्रसिद्ध लाल किताब में केसर और केसर तिलक से संबंधित अनेक उपाय बताए गए हैं।

लगातार तीन से छह महीनों तक केसर तिलक लगाने से जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देते हैं और यह समृद्धि की सिद्ध कुंजी है। केसर तिलक से अपने दिन की शुरुआत करें।

GROCERIES IMPEX : +91-9999092561, 9650635204 | vipin@groceriesimpex.com
Registered Office Address : R-49, Rita Block, Shakarpur, Delhi-110092.
Packing Unit : D-94/A, Matiala Extension, Dwarka, New Delhi-110059.

अनुक्रमणिका

सामाजिक मर्यादाओं के संस्थापक राम	प्रमोद भार्गव	04
राम के जीवन में समता व समरसता	संकलन	06
भव्यता के विस्तार का रोडमैप तैयार	दीपक द्विवेदी	08
रामनवमी, रामोत्सव व विश्व हिंदू परिषद	प्रवेश कुमार	11
सत्ता का महासंग्राम और विचारधाराओं का संघर्ष	विप्लव विकास	13
वनों की सुनें पुकार	ललित गर्ग	15
भारतीय राजनीति में क्या बदलेगा!	डॉ. संतोष झा	18
बैठक में राष्ट्र-चिंतन का महायज्ञ	आशीष कुमार 'अंशु'	20
किल्लत, कालाबाजारी व उपभोक्ता की अग्निपरीक्षा	रामेंद्र सिन्हा	22
सोशल मीडिया के दुरुपयोग पर टेढ़ी दृष्टि	दीपक कुमार द्विवेदी	25
एक सामाजिक संतुलन: धर्मांतरण और विवाह कानून	डॉ. ईलेवान ठाकर	27
समाचार	-	28

पंजीयन शुल्क

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

सामाजिक मर्यादाओं के संस्थापक राम

भारतीय पुरुष अनंतकाल से अवतारों और महानायकों के रूप में शिलालेख रचता रहा है। इनके चरित्र की जीवनशैली इतनी अद्वितीय रही कि इनकी दिनचर्या से प्रस्फुटित सभ्यतागत सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य हजारों वर्ष से अनेक झंझावतों से संघर्षरत रहते रहने के तत्पश्चात भी करोड़ों लोगों के जीवनादर्श की थाती बने हुए हैं।

सूर्यवंश की शास्वत चरित्रगाथा वैवस्त सूर्य के पुत्र मनु और उनकी पत्नी कामगोत्रजा श्रद्धा के पुत्र इक्ष्वाकु के अयोध्या के सम्राट बनने से आरम्भ होती है और उनकी छत्तीसवीं पीढ़ी में जन्म लेते हैं राजा दशरथ! इनकी तीन पत्नियां थीं, कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी। कौशल्या पुत्र राम सबसे बड़े थे। लक्ष्मण और शत्रुधन सुमित्रा के और कैकेयी के पुत्र थे भरत। इन चारों भ्राताओं के विवाह जनकपुर के राजा जनक की पुत्रियों और भतीजियों से हुए थे। राम का सीता से, लक्ष्मण का सीता की बहन उर्मिला से, भारत का मांडवी से और शत्रुघ्न का पाणिग्रहण श्रुतिकीर्ति से हुआ था। चारों भाइयों की दो-दो संतानें थीं।

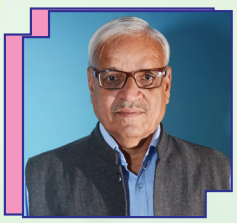

प्रमोद भार्गव

त्रेताकाल राज-तंत्र का युग था। परंतु यही वह राज-तंत्र था, जिसने स्थापित जड़-मूल्यों में परिवर्तन की शुरूआत की। ये बदलाव राज-तंत्र के संचालन की विधियों से लेकर सनातन-सांस्कृतिक संरचना तक में किए गए।

रामराज्य की परिकल्पना के आधार-सूत्र राजा दशरथ के व्यवहार से स्थापित होने लग गए थे। राजा दशरथ कोई भी महत्वपूर्ण कार्य गुरु वशिष्ट का निर्देश मिले बिना क्रियान्वित नहीं करते थे। वे चक्रवर्ती सम्राट हैं, परंतु गुरु की आज्ञा के लिए, उनके आश्रम पहुंचकर आदर्श स्थापित करते हैं। उनके चारों पुत्र विद्यार्जन के लिए गुरु के आश्रम में जाते हैं। जबकि वे गुरु को राजभवन बुलाकर शिक्षा दिला

सकते थे। विद्यार्थी चाहे राजकुमार हों या श्रेष्ठि-सुत उन्हें पढ़ने के लिए गुरू के आश्रम या पाठशाला जाकर ही शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। इस आदर्श की परम्परा दशरथ डालते हैं। आज देश की शिक्षा-व्यवस्था का इसे दुर्भाग्य व दुर्गुण ही कहा जाएगा कि सत्ता-संचालक अपनी संतानों को देश तो छोड़िए विदेशी शिक्षा संस्थानों में पढ़ा रहे हैं।

ऋषि विश्वामित्र यज्ञ-विध्वंसक राक्षसों से मुक्ति के लिए राजा दशरथ से राम एवं लक्ष्मण को मांगते हैं। दशरथ अबोध पुत्रों को संकट में डालने वाली इस मांग से विचलित व व्यथित हो पड़ते हैं। उनकी इस पीड़ा से परिचित होने के उपरांत ऋषि ने उन्हें धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिए सम्राटों के त्याग व बलिदान के उपदेश दिए। राजा के देश के प्रति दायित्वों के दृष्टांत सुनाए, किंतु दशरथ सहमत नहीं हुए। बाद में ऋषि वशिष्ठ के समझाने पर तैयार हुए और राम-लक्ष्मण को ऋषि के साथ जाने की आज्ञा दी। यह स्थिति आदर्श अनुशासन की प्रतीक तो है ही, राष्ट्र की सुरक्षा के लिए पुत्रों को संकट में डाल देने की द्योतक भी है। आज कितने मंत्री हैं, जिनके पुत्र सेना में हैं?

राजा जनक द्वारा पुत्री सीता के स्वयंवर की सूचना मिलने पर विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को लेकर जनकपुरी पहुंचते हैं। विश्वामित्र की आज्ञा और आशीर्वाद पाकर राम उस शिव-धनुष को तोड़ देते हैं, जिसे अन्य राजा नहीं तोड़ पाते। सीता राम के गले में जयमाला डालकर स्वयंवर सम्पन्न करती हैं। जनक इस उपलब्धि की सूचना-पत्र के साथ दूत के माध्यम से राजा दशरथ को अयोध्या भेजते हैं। इस संदेश में आमंत्रण की विनम्र प्रार्थना भी है। दशरथ इस शुभ समाचार को देने वाले दूत को भेंट देते हैं, किंतु दूत किसी भी प्रकार का उपहार स्वीकार नहीं करता है। वह विनम्र भाव से कहता है, 'यह नैतिकता के विरुद्ध है।' यानी उस युग में एक दूत का आचरण भी नैतिकता से परिपूर्ण हैं। आज दूत मध्यस्थता के बहाने लालच और बिचौलिया (दलाल) का काम कर रहे हैं।

दशरथ चारों पुत्रों के स्वयंवर के बाद पुत्र-बंधुओं को लेकर अयोध्या के मार्ग पर लौट रहे हैं। इस मार्ग में धनुर्भंग की घटना से क्रोधित परशुराम मिल गए। उन्होंने गुरु वशिष्ठ और विश्वामित्र का अभिवादन किया। दशरथ ने रथ से उतरकर परशुराम के चरण छुए और परशुराम के उपासक होने की बात कही तथा राम-लक्ष्मण के लिए आशीर्वाद मांगा। परशुराम ने राम के अंगों में प्रकट लक्षणों को जाना और आश्वस्त होकर भुजाएं फैलाकर उन्हें आगोश में ले लिया। यहीं परशुराम अपने वृद्ध होने और दक्षिण से पैर पसार रहे आतंक की चिंताओं से राम को अवगत कराते हैं तथा राम को शक्ति-सम्पन्न बनाने की दृष्टि से वैष्णवी धनुष भेंट करते हैं। राम सहित सभी भाइयों ने पत्नियों समेत परशुराम के चरण छूकर आशीर्वाद लिया। दशरथ और उनके मर्यादित स्वभाव से यहां अयोध्या की यौद्धिक शक्ति में वृद्धि होती है।

अयोध्या पहुंचने के बाद दशरथ ने राम को युवराज बना देने के प्रसंग पर विचार किया। गुरु वशिष्ठ से अनुमति ली और राम को युवराज बना देने की घोषणा कर दी। किंतु होनी तो कुछ और होनी थी। कैकेयी की दासी मंथरा ने उन्हें भड़का दिया। मानव-मनोविज्ञान की स्वभावगत लाचारी है कि मनुष्य रक्त-सम्बंधों की ओर झुकता है। सो कैकेयी दशरथ से भरत को अयोध्या का राजा बना देने के हठ के साथ राम को 14 वर्ष का वनवास देने के वचन के संकल्प के साथ कोप-भवन में रुठकर बैठ गईं। राजा से वरदान देने के हठ की यह सूचना राम को मिली तो राम अधिकार-बहिष्कार से असहिष्णु आ-चरण करने के वनस्वित माता कैकेयी से वन गमन की आज्ञा और आशीर्वाद के लिए उनके निकट पहुंचते हैं। सत्ता का यह त्याग राम के आदर्श आचरण की पराकाष्ठा है।

वनगमन के समय रावण द्वारा छल से सीता के अपहरण के बाद उनकी खोज में राम की मुलाकात हनुमान और सुग्रीव से होती है। राम अतिचारी सुग्रीव के अग्रज बालि का वध करते हैं और सुग्रीव का राज्याभिषेक लक्ष्मण को किष्किंधा भेजकर कराते हैं। राम किष्किंधा में प्रवेश नहीं करते हैं, क्योंकि उन्हें साधु वेश में रहते हुए किसी राज्य की सीमा में प्रवेश की अनुमति नहीं है। यही उदाहरण राम लंकापति रावण के वध और लंका पर विजय के उपरांत प्रस्तुत करते हैं। वे रावण के अनुज विभीषण का राजतिलक लक्ष्मण, सुग्रीव हनुमान और ऋषियों को भेजकर कराते हैं। ये वे मर्यादित आचरण हैं, जो राम को महान नायक के साथ ईशवरत्व प्रदान करते हैं। लेकिन जब राम सीता को लेकर अयोध्या के लिए प्रस्थान करते हैं तो सुग्रीव और हनुमान को आदेश देते हैं कि जिस सेतु का लंका पहुंचने के लिए निर्माण किया गया है, उसे लंका की ओर से तोड़ दें। क्योंकि जो देशद्रोही विभीषण अपने कुल और राष्ट्र का नहीं हुआ, उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता है। राम की मर्यादा और उनके सहिष्णु आचरण की परछाई में इस संदेश को एक सबक के रूप में देखने की आवश्यकता है, क्योंकि भारत लगातार ऐसे ही राष्ट्रद्रोहियों से जूझता रहा है और वर्तमान में भी जूझ रहा हैं।

राम के जीवन में समता व समरसता

राम मानव के लिए परिपूर्ण अनुकरणीय आदर्श थे। उनकी माता-पिता के प्रति भक्ति, भाइयों के प्रति स्नेह, पत्नी के प्रति एकनिष्ठा प्रेम और प्रजा के प्रति पुत्रवत वात्सल्य-भाव सबके प्रेम का विषय बन गया। दुर्गम कठिनाइयों से वे पार निकले। माता-पिता तथा बाद में अर्धांगिनी के वियोग का दुःख सहन किया और अंत में पाप एवं अधर्म की शक्तियों पर विजय प्राप्त की। मनुष्यों के नायक के जीवन का एक पक्ष और भी है, अपने समाज के प्रति कर्तव्य, जिसका वह स्वयं भी एक घटक है। जनता की इच्छा का पालन उस नायक की सबसे बड़ी प्राथमिकता है, जो नायक को लोकरक्षक, लोकसंग्रही, लोकमंगलकारी लोकतांत्रिक आदि भूमिकाओं में दृढ़ता से खड़ा रखती है। राजा होने के पश्चात् भी राम मन-वचन-कर्म से लोकतांत्रिक थे। उनका शासन-तंत्र लोकतंत्र-नियंत्रित राजतंत्र था। वहां लोगों की इच्छा, वचनों एवं सुझावों के माध्यम से अभिव्यक्त होती थी। इस अभिव्यक्ति के कुछ अन्य स्रोत थे-

गुरुजन, ऋषिगण, मंत्रिगण एवं विद्वजन।

वस्तुतः वे सब समाज के महत्वपूर्ण अंग थे। जो जनता में व्याप्त राजनीति, सामाजनीति और संस्कृति से राम को अवगत कराते रहते थे तथा उन्हें लोकरंजन, लोककल्याण और लोकसेवा के लिए प्रेरित करते थे। उस समय की आश्रम-व्यवस्था भी राज-काज के सुचारू- संचालन में अपना योगदान दिया करती थी। राम तो कोई भी कार्य अपने सहयोगियों के परामर्श के बिना नहीं करते थे चाहे युद्ध के लिए व्यूह रचना हो अथवा रावण के भाई विभीषण की शरणागति हो ,सर्वत्र सामान्य सहमति से ही कार्य हो। वस्तुतः रावण की अमर्यादित सत्ता के ध्वंस हेतु चलाए गए महाभियान में समाज के सभी वर्गों का योगदान इसी कारण प्राप्त हुआ था। किसी भी अभियान की सफल और सार्थक परिणति के लिए नायक के पीछे दृढ़-संकल्प वाली लोकशक्ति का सक्रिय समर्थन तथा सहयोग आवश्यक है। समाज के शोषित, पीड़ित समुदाय के एक-एक व्यक्ति को अन्याय और अत्याचार के प्रतिकार हेतु संघर्ष के लिए तैयार कर उनके सशक्त संगठन का निर्माण करना आवश्यक है।

भाव

राम में समरसता का गुण अत्यंत प्रमुख रूप से दिखाई पड़ता है। उनके जीवन में कई प्रसंग इस बात को सिद्ध भी करते हैं। इस आलेख में इस पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है।

लोकनायक राम इस संदर्भ में एक अनुकरणीय उदाहरण हैं।

वन गमन के पश्चात् प्रभु श्रीराम की निषादराज से भेंट होती है। निषादराज के साथ वे भोजन करते हैं और सभी वर्णों को संदेश देते हैं कि सह अस्तित्व ही प्रकृति का नियम है। आगे जब मंत्री सुमंत्र राम से वापस चलने के लिए कहते हैं तब लक्ष्मण कुछ कड़वी बात कह देते हैं। इसपर राम अपनी सौगंध देकर सुमंत्र से कहते हैं कि कृपया यह बात पिताश्री को न बताएं। यहां भगवान का संदेश है कि अपनों से छोटों के दुर्गुणों को छिपाना चाहिए और उन्हें उचित सीख देनी चाहिए। आगे केवट ने गंगा पार करवाने के लिए बहुत तर्क-वितर्क किया। गंगा पार उतरने पर श्रीराम ने संकेत किया और माता सीता केवट को अपनी रत्नजड़ित अंगूठी उतराई के रूप में देने लगी; 'पिय हिय की सिय जाननिहारी। मनि मुदरी मन मुदित उतारी।।' यहां यह भाव है कि हर किसी को उसके श्रम के अनुरूप उसका उचित पारिश्रमिक देना चाहिए। इसी प्रकार वन में जड़रूपी अहिल्या को अपने स्पर्श से चैतन्य कर देना इस बात का द्योतक है कि जब तक व्यक्ति में रामत्व नहीं आता, जीव में जड़ता बनी रहती है। जीवन में श्रीराम के गुणों का स्पर्श होने पर ही ईश्वरीय चेतना का बोध होता है। प्रभु श्रीराम एक भीलनी शबरी के जूठे बेर खाकर यह संदेश देते हैं कि भगवान पदार्थ के भोग के भूखें नहीं, अपितु भाव के भूखें हैं। माता सीता का शोध करते हुए पहले हनुमान और तत्पश्चात् सुग्रीव से श्रीराम की भेंट प्रसिद्ध है। सुग्रीव से मित्रता कर उन्होंने मित्रता धर्म का

पूर्णतः अनुपालन किया। सुग्रीव से छल करनेवाले बाली का वध कर सुग्रीव को उनकी पत्नी और राज-पाठ लौटाया। मित्रता निभाते हुए सुग्रीव ने भी अपनी पूरी वानर सेना प्रभु श्रीराम की सेवा में लगा दी।

उधर जब रावण की कुनीतियों से त्रस्त विभीषण ने प्रभु की शरण ली तब श्रीराम ने उन्हें लंका का राजा बना दिया। शत्रु पक्ष को निर्बल करने के लिए उस पक्ष के असंतुष्टों को अपने साथ लेकर शत्रु पक्ष पर हावी होना सरल हो जाता है। राम ने वही किया। यह सर्वविदित सत्य है कि रावण प्रकांड विद्वान था। इसीलिए मृत्यु के अंतिम क्षणों में प्रभु श्रीराम ने अपने अनुज लक्ष्मण को रावण के पास ज्ञान लेने भेजा। यहां यह समझना होगा कि यदि शत्रु का अंत आ गया है और यदि उसके पास कुछ ज्ञान है तो उसको ग्रहण करने में कोई बुराई नहीं है। ज्ञानार्जन हेतु सदैव तैयार रहना चाहिए।

राम तत्व का चिंतन

यदि इसपर चिंतन किया जाए कि प्रभु श्रीराम आज कहां मिलेंगे, तो पहले हमें राम तत्व को समझना होगा। शास्त्र चिंतन और स्वाध्याय राम को पाने का सरल मार्ग है। श्रीराम चरित मानस में उद्धृत है- सुनु सर्बग्य सकल उर बासी। बुधि बल तेज धर्म गुन रासी।। अर्थात हे सर्वज्ञ! हे सबके हृदय में बसने वाले। यहां भाव यह है कि प्रभु श्रीराम हमारे अंतः करण में विराजते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में भी कुछ ऐसा ही कहा गया है- ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति अर्थात् सबका शासन करनेवाला नारायण समस्त प्राणियों के हृदय देश में स्थित है। इसके अतिरिक्त यह भी देखिए कि भगवान कहां प्रकट होते हैं- हरि ब्यापक सर्बत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना अर्थात् भगवान सब जगह समान रूप से व्यापक हैं, प्रेम से वे प्रकट हो जाते हैं। मनीषियों का दावा है कि केवल राम नाम से ही जीवन में बहुत कुछ सकारात्मक घटने लगता है। कहौं कहां लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई अर्थात् मैं नाम की बड़ाई कहां तक कहूं, राम भी नाम के गुणों को नहीं गा सकते।

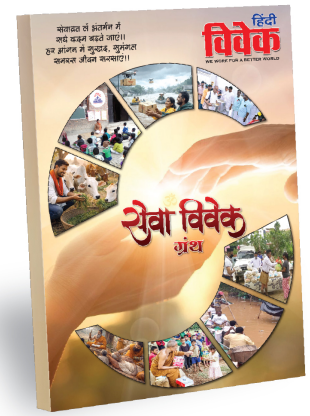

हर भारतीय प्रभु श्रीराम की लीलाओं से भलीभांति परिचित है। किंतु समय-समय पर श्रीराम की जीवनी का चिंतन करते रहने से चित्त में शुद्धता और शरीर में ऊर्जा का संचार हो जाता है। श्रीराम भगवान तो हैं ही, व्यक्ति के रूप में भी श्रीराम आदर्श हैं। प्रभु श्रीराम के गुणों को आत्मसात करनेवाले मनुष्य को ही रामत्व का बोध हो पाएगा। मनुष्य का नश्वर शरीर शाश्वत ईश्वर को अपनाने का सशक्त माध्यम है। श्रीराम शाश्वत हैं। जिसका आदर्श श्रीराम हैं, उसका जीवन धन्य है।

●●●

राम मंदिर

भव्यता के विस्तार का रोडमैप तैयार

दीपक द्विवेदी

अयोध्या भारतीय सभ्यता की वह दिव्य नगरी, जहां आस्था, इतिहास और संस्कृति का अद्भुत संगम दिखाई देता है। अयोध्या के विकास के लिए रोडमैप तैयार है और आनेवाले दिनों में यह नगरी और भी आधुनिकतम सुविधाओं से सज-धज कर तैयार हो जाएगी।

अयोध्या का श्रीराम मंदिर सदियों के संघर्ष और आस्था की प्रतीक गाथा है। 1528 में बाबर के सेनापति मीर बाकी द्वारा मंदिर स्थल पर मस्जिद निर्माण के बाद यह विवाद प्रारम्भ हुआ। 1853 में पहली बार बड़े स्तर पर संघर्ष हुआ। 1949 में विवादित स्थल पर रामलला की मूर्तियां स्थापित हुईं, जिससे मामला न्यायालय पहुंचा। 6 दिसम्बर 1992 को विवादित ढांचा गिरा, जिससे देशव्यापी प्रभाव पड़ा। लम्बी न्यायिक प्रक्रिया के बाद 9 नवम्बर 2019 को सर्वोच्च न्यायालय ने ऐतिहासिक निर्णय देते हुए मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया, जो सदियों की आस्था और संघर्ष का परिणाम था। 5 अगस्त 2020 को भूमि पूजन और 22 जनवरी 2024 को प्राण-प्रतिष्ठा के साथ यह मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, आस्था और राष्ट्रीय चेतना का जीवंत प्रतीक बनकर उभरा है। अयोध्या का श्रीराम मंदिर आधुनिक भारत की सबसे महत्वपूर्ण सांस्कृतिक उपलब्धियों में से एक है, जो आस्था, परम्परा और आधुनिक इंजीनियरिंग का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करता है। भारतीय नागर शैली में निर्मित यह मंदिर लगभग 380 फीट लम्बा, 250 फीट चौड़ा और 161 फीट ऊंचा है। तीन मंजिला इस मंदिर का निर्माण बिना स्टील के, बंसी पहाड़पुर के पत्थरों और मजबूत ग्रेनाइट नींव पर किया गया है, जिससे इसकी आयु लगभग 2500 वर्ष मानी जाती है।

मंदिर में कुल 392 स्तंभ और 44 स्वर्णमंडित सागौन लकड़ी के द्वार हैं। भूतल के गर्भगृह में भगवान श्रीराम के बालरूप रामलला विराजमान हैं, जबकि प्रथम तल पर भव्य राम दरबार स्थापित है। द्वितीय तल विशेष धार्मिक अनुष्ठानों के लिए नियोजित है। मंदिर के पांच प्रमुख मंडप-नृत्य, रंग, सभा, प्रार्थना और कीर्तन मंडप-भक्ति और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के विविध आयामों को दर्शाते हैं।

लगभग 70 एकड़ के विस्तृत परिसर में परिक्रमा पथ, सीता कुंड तथा वाल्मीकि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, शबरी और निषादराज जैसे महापुरुषों को समर्पित स्थल विकसित किए जा रहे

हैं। निर्माण में लार्सन एंड टुब्रो, टाटा कंसल्टिंग इंजीनियर्स और आईआईटी जैसे संस्थानों का योगदान रहा है। अयोध्या के विकास में कई महत्वपूर्ण चुनौतियां सामने हैं। तीव्र गति से बढ़ती श्रद्धालुओं की संख्या के कारण भीड़ प्रबंधन और शहरी क्षमता पर दबाव बढ़ रहा है। संकरी गलियां, यातायात जाम और जलनिकासी की समस्याएं अभी भी प्रमुख बाधाएं हैं। साथ ही, पर्यावरण संरक्षण, विशेषकर सरयू तट की संवेदनशीलता बनाए रखना आवश्यक है। तेजी से हो रहे व्यावसायीकरण के बीच सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संतुलन बनाए रखना भी एक बड़ी चुनौती है। केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार के संयुक्त प्रयासों से अयोध्या का तीव्र और योजनाबद्ध विकास हो रहा है, जिसमें लगभग 85,000 करोड़ से अधिक निवेश अवसंरचना और कनेक्टिविटी पर केंद्रित है। अब तक महर्षि वाल्मीकि अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (1450 करोड़) विकसित हो चुका है, जिसने अयोध्या को देश के प्रमुख शहरों से सीधे जोड़ा है । इसके विस्तार की भी योजना है, जिससे यात्री क्षमता कई गुना बढ़ेगी। साथ ही अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन का आधुनिकीकरण, राम पथ, भक्ति पथ और धर्म पथ का निर्माण तथा राम की पैड़ी और गुप्तार घाट का सौंदर्यीकरण पूर्ण हो चुका है। इन प्रयासों से तीर्थाटन में भारी वृद्धि हुई है। वर्तमान में कई बड़े प्रोजेक्ट प्रगति पर हैं। 3935 करोड़ की 67 किमी लम्बी आउटर रिंग रोड अयोध्या को लखनऊ, वाराणसी और प्रयागराज से जोड़ते हुए यातायात दबाव कम करेगी। इसके अलावा 2180 करोड़ की ग्रीनफील्ड टाउनशिप, 650 करोड़ का राम कथा संग्रहालय तथा राम वन गमन पथ (4403 करोड़) जैसे प्रोजेक्ट अयोध्या को एक समग्र तीर्थ-नगर के रूप में विकसित कर रहे हैं। स्मार्ट सिटी योजना के अंतर्गत गलियों का चौड़ीकरण, जलनिकासी सुधार और आधुनिक शहरी सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है, जिससे अयोध्या एक सुव्यवस्थित और आधुनिक आध्यात्मिक नगरी के रूप में उभर रही है।

अयोध्या मास्टर प्लान 2031: आध्यात्मिक नगरी से वैश्विक शहर तक

अयोध्या आज एक ऐसे परिवर्तन के दौर से गुजर रही है, जहां विकास केवल निर्माण तक सीमित नहीं, बल्कि एक व्यापक और दूरदर्शी योजना का हिस्सा बन चुका है। मास्टर प्लान 2031 इसी परिवर्तन की आधारशिला है, जिसके अंतर्गत लगभग 133.67 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को विकसित करते हुए अयोध्या को एक विश्वस्तरीय आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और आधुनिक नगर के रूप में गढ़ा जा रहा है। •••

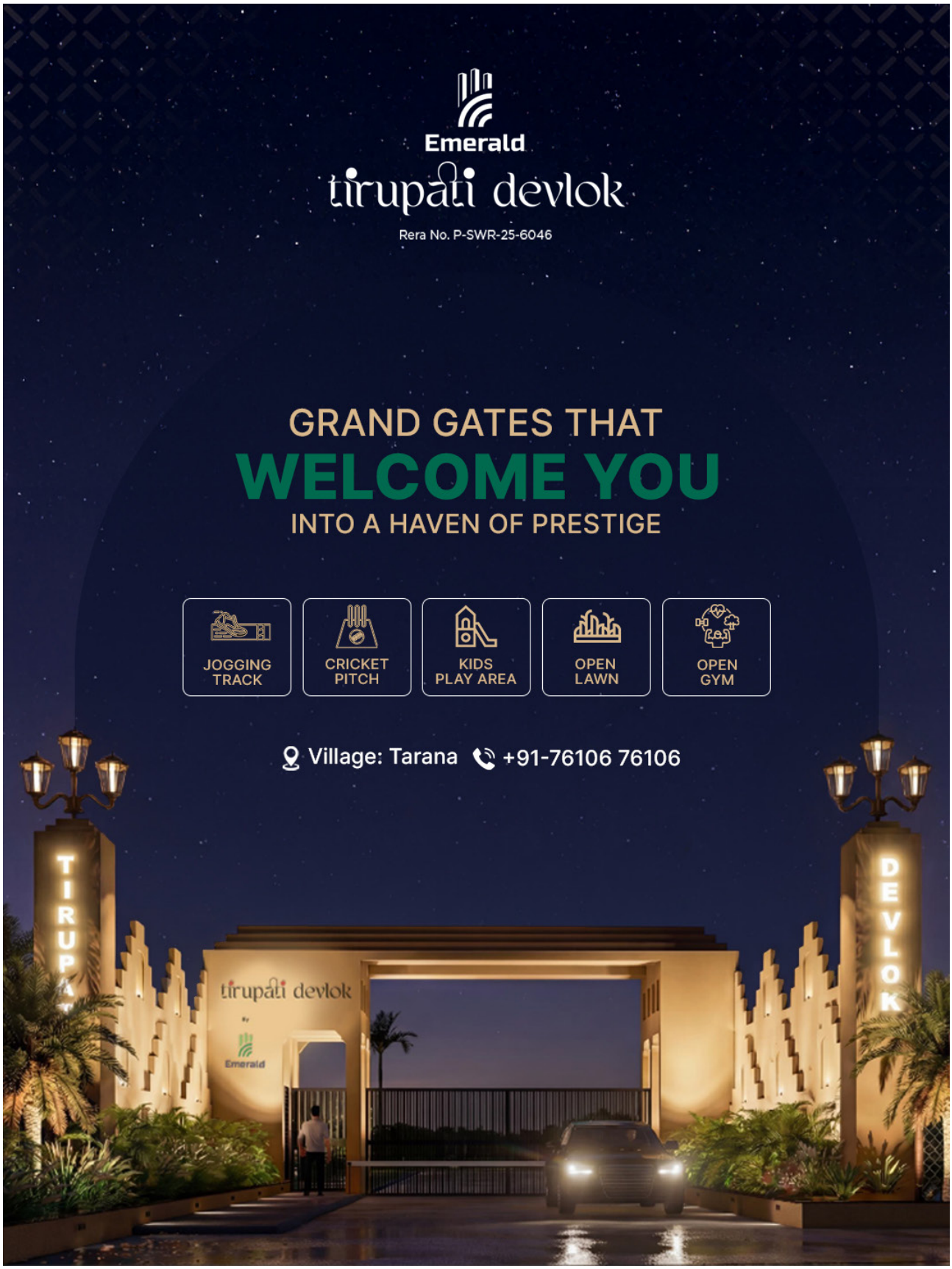

Emerald
tirupati devlok
Rera No. P-SWR-25-6046
GRAND GATES THAT
WELCOME YOU
INTO A HAVEN OF PRESTIGE
JOGGING TRACK
CRICKET PITCH
KIDS PLAY AREA
OPEN LAWN
OPEN GYM
Village: Tarana
+91-76106 76106
TIRUPATI
DEVLOK
tirupati devlok
Emerald

रामनवमी, रामोत्सव व विश्व हिंदू परिषद

विश्व हिंदू परिषद देशभर में रामनवमी के अवसर पर विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है, जिनमें शोभायात्राएं, भजन-कीर्तन, रामायण पाठ, मंदिरों में विशेष पूजन और सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ प्रमुख होते हैं।

भारत की सनातन संस्कृति में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का दिन अत्यंत पावन, शुभ और आध्यात्मिक चेतना से परिपूर्ण दिवस माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इसी दिन ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना का प्रारम्भ किया। वही वसंत ऋतु के इस कालखंड में प्रकृति भी नवजीवन धारण करती है। वृक्षों में नई कोंपलें, खेतों में नई फसलें और वातावरण में नई ऊर्जा का संचार होता है। इसी दिन से जगत जननी मां जगदम्बा के पूजन की पावन नवरात्र का भी शुभारम्भ होता है। हम हिंदू इसी दिन को हिंदू नववर्ष के रूप में मनाते हैं, जिसे नवसंवत्सर कहा जाता है। सम्पूर्ण भारत में इस दिवस को गुढ़ी पड़वा, उगादी, नवरेह आदि नामों से भी मनाया जाता है। यह हमारे सांस्कृतिक एकत्व का भी प्रतीक है। इसी भावना को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने का कार्य विश्व हिंदू परिषद निरंतर करता आ रहा है। परिषद भारतीय समाज का भारतीय मूल्य, मान्यताओं, संस्कृति, परम्पराओं और धार्मिक चेतना को आधार मानकर हिंदू समाज का संगठन हो, इसके लिए वर्षों से कार्यरत है। चैत्र मास का विशेष महत्व इस कारण भी है क्योंकि इसी पावन अवधि में 'रामनवमी' का पर्व भी आता है, जो भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। विश्व

डॉ. प्रवेश कुमार

हिंदू परिषद इसे रामोत्सव के रूप में मानता है। यह पर्व धर्म, मर्यादा, आदर्श और राष्ट्रधर्म के प्रतीक भगवान राम के जीवन से प्रेरणा लेने का अवसर प्रदान करता है। विश्व हिंदू परिषद देशभर में रामनवमी के अवसर पर विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है, जिनमें शोभायात्राएं, भजन-कीर्तन, रामायण पाठ, मंदिरों में विशेष पूजन और सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ प्रमुख होते हैं। भारत की अस्मिता और प्रभु राम एक ही हैं। भारत का समाज रामत्व में विश्वास रखने वाला समाज है। यही रामत्व जो हमें तुलसीदास जी की वाणी में दिखता है। जहां वे प्रभु राम के चरित्र का वर्णन करते हुए कहते हैं कि बेरिऊ राम बड़ाई करहीं, बोलनि मिलनि बिनय मन हरहिं। इसका अर्थ है कि शत्रु भी प्रभु राम जी की प्रशंसा करते हैं, बोलचाल, मिलने के ढंग और विनय से मन को वे हर लेते हैं। भगवान राम का चरित्र और भारत की दृष्टि में कोई भिन्नता नहीं है, बल्कि यह एक ही है। भारत ने विश्व शांति और सह-अस्तित्व के विचार को प्रसारित और प्रचारित किया है। प्रभु राम ने भी सदैव शांति मित्रता का विचार दिया, वही शठे शाठ्यं समाचरेत इसका अर्थ है दुष्ट के साथ दुष्टता (जैसा व्यवहार) करनी चाहिए। इसी को प्रभु राम ने भी बताया है। बिनय न मानत जलधि जड़, गए तीनि दिन बीति। बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति।। अर्थात् श्रीराम को समुद्र से रास्ता मांगने के लिए अनुनय-विनय करते हुए तीन दिन बीत चुके थे, लेकिन जड़ समुद्र ने कोई जवाब नहीं दिया। तब श्री राम न कहा कि बिना भय के प्रेम या आदर नहीं होता। वही प्रभु राम ने अपने जीवन में शुचिता, त्याग, समर्पण, करुणा और सामाजिक समरसता का विचार जन-जन को दिया। अपने मर्यादित जीवन के कारण उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया। विश्व हिंदू परिषद प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी रामोत्सव के कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है। वर्ष प्रतिपदा यानी की पहले नवरात्र से प्रारम्भ हो रहे रामोत्सव का उद्देश्य है प्रभु राम के चरित्र, उनके जीवन मूल्य के आदर्शों से लागों का परिचय कराना। इसलिए 19 मार्च से 2 अप्रैल तक होने वाले रामोत्सव में प्रभु राम के जीवन के विभिन्न आयामों को जन मानस के सामने रखना है। इन आयोजनों का उद्देश्य केवल धार्मिक उत्सव मनाना नहीं, बल्कि समाज में एकता, संगठन और सांस्कृतिक गौरव की भावना को सुदृढ़ करना है। हम देखें प्रभु राम के जीवन के विभिन्न पक्ष हैं जिनका चिंतन-मनन प्रत्येक व्यक्ति को करना ही चाहिए। प्रभु राम समता और ममता का अहम संदेश देते हैं। केवट के साथ प्रभु राम का सम्बंध और केवट का प्रभु राम के प्रति भाव रामायण में देखने लायक है। जिस प्रकार प्रभु राम ने समाज की संकल्पना को बताया है कि सहोदर भाव से ही समाज का जन्म होता है। वैसे ही केवट ने प्रभु राम और अपने को एक ही बिरादरी का बताया है। जिसमे वह कहता है की नाई से नाई, दर्जी से दर्जी कभी पैसे नहीं लेते वैसे ही आप और मैं दोनों तारने का काम करते है, मैं गंगा जी की तैराई कराता हूं वही आप तो भवसागर को पार लगाने वाले हैं। प्रभु राम ने समाज में समता और समरस होने के भाव को व्यक्त किया है। वही माता शबरी के जूठे बेरों का खाना यह सामाजिक समरसता का अहम संदेश प्रभु राम ने दिया इसी तत्व विचार को विश्व हिंदू परिषद मानता है। इसी का परिणाम है कि परिषद कहता है हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दू पतितों भवेत। मम दीक्षा हिन्दू रक्षा, मम मंत्र समानता।। अर्थात् सभी हिंदू भाई हैं, सब हिंदू आपस में सहोदर हैं। कोई यहां पतित नहीं, कोई निमन्न नहीं, कोई उच्च नहीं। हम सब एक पूर्वज की संतान हैं, हम सब हिंदू हैं। मेरी दीक्षा धर्म की रक्षा करना है और मेरा मंत्र समानता है। इसी प्रकार प्रभु राम जी के द्वारा उत्तर और दक्षिण को जोड़ने का भी काम किया गया, सम्पूर्ण राष्ट्र का एक विचार का एकत्व भाव के आधार पर संगठन प्रभु राम के जीवन में हमें दिखता है। वही प्रभु राम ने संघ शक्ति कलयुगे का अहम संदेश दिया। सुग्रीव-हनुमान जी की मित्रता और किस प्रकार साधारण से दिखने वाले लोगों में राष्ट्रत्व का विचार जागृत कर, उन्हें प्रशिक्षण दे, रावण जैसे योद्धा से संघर्ष की प्रेरणा फिर विजय के लिए प्रेरित करना कोई साधारण बात नहीं है। यह हिंदू समाज को समझना चाहिए। राजा को समाज में किसी भी व्यक्ति की बात को महत्व देना और लोकमत को महत्व देना यह भी प्रेरणा का संदेश है। वही राम राज्य की संकल्पना में विदित है कि भारत के जनमानस में कहीं भी शासन के सर्वोच्च मापदंडों की बात की जाती है तो रामराज की बात की जाती है। हम अपने परिवारों में, समाज में इस रामराज की संकल्पना को वर्षों से सुनते आ रहे हैं, यह भी यथार्थ है। हम देखें कि रामचरित मानस की चौपाई रामराज के अर्थ को भलीभांति परिभाषित करती है।

सत्ता का महासंग्राम और विचारधाराओं का संघर्ष

5 राज्यों में विधानसभा चुनाव की तिथि की घोषणा हो चुकी है। जिनमें पश्चिम बंगाल, असम, केरल, तमिलनाडु और पुडुचेरी शामिल है। राजनीतिक मंच पर क्या रणनीति चल रही है, इस आलेख में स्पष्ट किया गया है।

15 मार्च, 2026 की दोपहर जब मुख्य चुनाव आयुक्त ने विज्ञान भवन से 5 राज्यों के चुनावी कार्यक्रम की घोषणा की, तो वह केवल तारीखें नहीं थीं, बल्कि भारतीय राजनीति के अगले दशक की पटकथा का शीर्षक था। पश्चिम बंगाल की उग्र लहरें, असम के ब्रह्मपुत्र का शांत लेकिन दृढ़ प्रवाह और केरल के शांत बैकवार्टर्स में उठ रहा वैचारिक तूफान-ये चुनाव केवल मुख्य मंत्री चुनने के लिए नहीं, बल्कि यह तय करने के लिए हैं कि क्या भारत की क्षेत्रीय राजनीति अब पूरी तरह 'राष्ट्रीय सरोकारों' के साये में आ चुकी है।

पश्चिम बंगालः 'सोनार बांग्ला' और परिवर्तन की छटपटाहट

ममता बनर्जी की सरकार इस बार मडबल एंटी-इन्कंबेंसीफ (सत्ता विरोधी लहर) का सामना कर रही है। 2021 में 'बाहरी बनाम भीतरी' का कार्ड खेलकर उन्होंने सत्ता बचाई थी, लेकिन 2026 की जमीनी सच्चाई बदल चुकी है। संदेशखाली की घटनाओं और शिक्षक भर्ती घोटाले ने तृणमूल के कैडर आधारित शासन की नींव हिला दी है। भाजपा ने यहां 'बूथ विजय अभियान' के तहत अपनी जड़ें गहरी की हैं। पार्टी अब केवल रैलियों पर निर्भर नहीं है, बल्कि उसके पास अब एक मजबूत स्थानीय नेतृत्व है।

विप्लव विकास

असमः हिमंत का 'अजेय'दुर्ग और भाजपा की प्रचंडता

असम में चुनाव की घोषणा केवल एक औपचारिकता मात्र लग रही है। मुख्य मंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने पिछले 5 वर्षों में राज्य की राजनीति को जिस 'क्रेजी' गति से बदला है, उसने विपक्ष के पास कोई मुद्दा ही नहीं छोड़ा है। असम की 126 सीटों पर भाजपा की जीत इस बार 'ऐतिहासिक' से अधिक 'प्रचंड' होने वाली है। इसके पीछे तीन मुख्य कारक हैं।

एनआरसी और परिसीमन के बाद स्वदेशी असमिया लोगों की राजनीतिक शक्ति सुरक्षित हुई है। इससे 'असमिया अस्मिता' का मुद्दा भाजपा के पक्ष में मजबूती से खड़ा है। चाहे वह ब्रह्मपुत्र पर पुलों का जाल हो या चाय बागान श्रमिकों के लिए कल्याणकारी योजनाएं, भाजपा ने लाभार्थियों का एक नया वर्ग तैयार किया है। जो हिमंता बिस्व सरमा के साथ मजबूती से खड़ा है। वहीं कांग्रेस और बदरुद्दीन अजमल की एआईयूडीएफ का गठबंधन टूटना भाजपा के लिए 'केक वॉक' जैसी स्थिति पैदा कर रहा है। ऊपरी असम से लेकर बराक घाटी तक, मतदाता 'स्थिरता' के नाम पर वोट करने को तैयार

है। यहां भाजपा का लक्ष्य केवल जीत नहीं, बल्कि 100+ सीटों के साथ 'क्लीन स्वीप' करना है।

केरलः लाल दुर्ग में 'केसरिया' पदचाप

केरल की राजनीति हमेशा से एलडीएफ और यूडीएफ के बीच पेंडुलम की तरह झूलती रही है। लेकिन 2026 का चुनाव इस 'बाइनरी' को तोड़ने वाला साबित होगा। केरल में भाजपा ने 'ईसाई-हिंदू' एकता का एक नया प्रयोग किया है। लव जिहाद और कट्टरपंथ के खिलाफ ईसाई समुदाय का एक बड़ा वर्ग अब भाजपा की ओर देख रहा है। भले ही एलडीएफ का संगठन मजबूत हो, लेकिन पब्लिक सेंटिमेंट यह है कि केरल का युवा अब 'हड़ताल और बंद' की राजनीति से ऊब चुका है। भाजपा इस बार विधानसभा में केवल एक या दो सीटें नहीं, बल्कि एक 'निर्णायक ब्लॉक' के रूप में उभरेगी, जो सरकार बनाने या गिराने की ताकत भले न रखे, पर नीति-निर्धारण में हस्तक्षेप अवश्य करेगी।

दक्षिण का द्वारः तमिलनाडु और पुडुचेरी

तमिलनाडु में अन्नामलाई के नेतृत्व में भाजपा ने द्रविड़ राजनीति की जड़ों को चुनौती दी है। हालांकि यहां मुकाबला त्रिकोणीय है, लेकिन भाजपा का बढ़ता वोट शेयर यह संकेत दे रहा है कि 2026 'हिंदी विरोधी' राजनीति के अंत की शुरुआत हो सकती है। पुडुचेरी में एन. रंगास्वामी और भाजपा का गठबंधन एक बार फिर सुशासन के दम पर सत्ता में वापसी करता दिख रहा है।

2026 के चुनाव परिणाम भारत के संघीय ढांचे में एक बड़ा वैचारिक बदलाव लाएंगे। पश्चिम बंगाल में यदि परिवर्तन होता है, तो यह ममता बनर्जी की राजनीति का सूर्यास्त होगा और सरकार नहीं रहने के बाद तृणमूल कांग्रेस का सांगठनिक ढांचा भी चरमरा सकता है। असम में भाजपा की जीत यह सिद्ध करेगी कि 'राष्ट्रवाद और विकास' का मॉडल उत्तर-पूर्व में स्थाई हो चुका है। केरल में भाजपा की बढ़त दक्षिण भारत में 'भगवा' के विस्तार की नई पटकथा लिखेगी। साथ ही वामपंथ की दलिय राजनीति के दुर्ग का ढहना शुरू हो जाएगा। एक तरह से तिरूवनंतपुरम में भाजपा का मेयर बनते ही इस अभियान का सशक्त शुभारम्भ हो चुका है। विश्व का इतिहास कहता है कि जहां से जनता ने वामपंथियों को सत्ता से उखाड़ फेंकना है वहां दुबारा अवसर नहीं दिया। भारत में पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा जीवंत उदाहरण है। भारत का वामपंथी भारत विरोध की जड़ है ये बात प्रबुद्ध समाज के साथ-साथ सचेतन कामरेड तक जानते हैं। इस बार के चुनाव में जनता का मौन बहुत कुछ कह रहा है। रैलियों की भीड़ से अधिक, गांवों की चौपालों पर होने वाली चर्चाएं इस बार मन भारतकी नई राजनीति की गवाह बन रही हैं। 4 मई को जब ईवीएम खुलेंगी, तो वह केवल जनादेश नहीं होगा, बल्कि आने वाले 2029 के लोकसभा चुनावों का 'ट्रेलर' भी होगा।

●●●

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

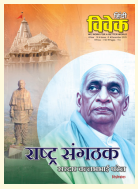

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय
प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067
सम्पर्क : +91 95949 91884
hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

वनों की सुनें पुकार

संरक्षण

ललित गर्ग

यदि वनों की कटाई जारी रही और इसका संरक्षण समुचित तरीके से नहीं किया गया तो पृथ्वी पर जीवन का संतुलन ही संकट में पड़ जाएगा। आज विश्व पर्यावरणीय असंतुलन के गम्भीर दौर से गुजर रहा है, ऐसे में आवश्यक है कि प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन रोका जाए।

वन केवल पेड़ों का समूह नहीं, बल्कि मानव जीवन और खाद्य सुरक्षा के मूल आधार हैं। विश्व की करोड़ों जनसंख्या प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से वनों से मिलने वाले खाद्य पदार्थों, औषधियों, फल, बीज, शहद, कंद-मूल और अन्य संसाधनों पर निर्भर है। वन न केवल भोजन प्रदान करते हैं, बल्कि कृषि को भी सुरक्षित रखते हैं, क्योंकि वे वर्षा चक्र, मिट्टी की उर्वरता और जल संरक्षण को बनाए रखते हैं।

आज विश्व पर्यावरणीय असंतुलन के गम्भीर दौर से गुजर रहा है। जलवायु परिवर्तन, तापमान वृद्धि, अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़, भूस्खलन और जंगल की आग जैसी घटनाओं की बढ़ती आवृत्ति यह संकेत दे रही है कि प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। इस संकट के मूल में वनों की अंधाधुंध कटाई, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन है। वन पृथ्वी के फेफड़ों की तरह है, जो कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर ऑक्सीजन प्रदान करते हैं और वैश्विक तापवृद्धि को नियंत्रित करते हैं। यदि वन नहीं रहेंगे तो जलवायु संतुलन की कल्पना भी सम्भव नहीं है।

वनों का महत्व केवल पर्यावरणीय संतुलन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आर्थिक और सामाजिक जीवन से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। विश्व के करोड़ों लोगों की आजीविका वनों पर निर्भर है। लघु वनोपज, औषधीय पौधे, गोंद, रेजिन, बांस, लाख, शहद और जड़ी-बूटियां ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। आज इको-टूरिज्म के माध्यम से भी रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हो रहे हैं। यदि वनों का संरक्षण किया जाए तो वे सतत विकास और हरित अर्थव्यवस्था के सबसे बड़े आधार बन सकते हैं। वनों का सामाजिक और सांस्कृतिक म हत्व भी अत्यंत व्यापक है। विशेष रूप से आदिवासी और वनवासी समुदायों का जीवन वनों से जुड़ा हुआ है। उनकी संस्कृति, परम्पराएं, आस्था और जीवनशैली वनों पर आधारित हैं। उनके लिए वन केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन, संस्कृति और अस्तित्व का आधार हैं। इसलिए वन संरक्षण केवल पर्यावरण का प्रश्न नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक संरक्षण और मानवाधिकार का भी विषय है।

भारत के संदर्भ में वनों का महत्व और भी अधिक व्यापक है। भारतीय संस्कृति में वृक्षों को देवतुल्य माना गया है। पीपल, वट, नीम, तुलसी आदि वृक्ष केवल वनस्पति नहीं, बल्कि जीवन और चेतना के प्रतीक माने गए हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृति में 'वन' केवल जंगल नहीं था, बल्कि ज्ञान, साधना, तप, शिक्षा और संस्कृति का केंद्र था। आश्रम, गुरुकुल और तपोवन भारतीय ज्ञान परंपरा के केंद्र रहे हैं। यह हमारी सांस्कृतिक चेतना का प्रमाण है कि हमने प्रकृति को उपभोग की वस्तु नहीं, बल्कि पूज्य माना।

आज भारत सहित विश्व के सामने सबसे बड़ी चुनौती विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करने की है। यदि विकास के नाम पर वनों का विनाश होता रहा, तो भविष्य की पीढ़ियों के लिए जीवन संकट में पड़ जाएगा। इसलिए अब विकास की अवधारणा को बदलना होगा। हमें 'ग्रीन डेवलपमेंट' और 'सस्टेनेबल डेवलपमेंट' की दिशा में आगे बढ़ना होगा, जिसमें वन संरक्षण, जल संरक्षण, जैव विविधता संरक्षण और स्वच्छ ऊर्जा को प्राथमिकता दी जाए।

वन संरक्षण केवल सरकारों का दायित्व नहीं है। यह समाज, समुदाय और प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। वृक्षारोपण केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक सामाजिक आंदोलन बनना चाहिए। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कम से कम एक वृक्ष लगाकर उसकी देखभाल करे, तो पर्यावरण संकट का बड़ा समाधान सभव है। विद्यालयों, धार्मिक संस्थाओं, सामाजिक संगठनों और स्थानीय समुदायों को वन संरक्षण अभियान से जोड़ा जाना चाहिए।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम वनों को केवल लकड़ी, ईंधन और भूमि के स्रोत के रूप में न देखें, बल्कि उन्हें जीवन के आधार के रूप में समझें। वन पृथ्वी की जैव विविधता, जल, वायु, जलवायु, कृषि और मानव जीवन की सुरक्षा के सबसे बड़े संरक्षक हैं। यदि वन सुरक्षित रहेंगे, तो मानव सभ्यता सुरक्षित रहेगी।

अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस हमें यह संदेश देता है कि प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखना ही मानव सभ्यता के अस्तित्व की सबसे बड़ी शर्त है। यदि हम सचमुच अपने भविष्य को सुरक्षित रखना चाहते हैं, तो हमें वनों की रक्षा को अपनी प्राथमिकता बनाना होगा। हमें यह समझना होगा कि जब हम एक वृक्ष बचाते हैं, तब हम केवल एक पेड़ नहीं, बल्कि जीवन, पर्यावरण और भविष्य को बचाते हैं।

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

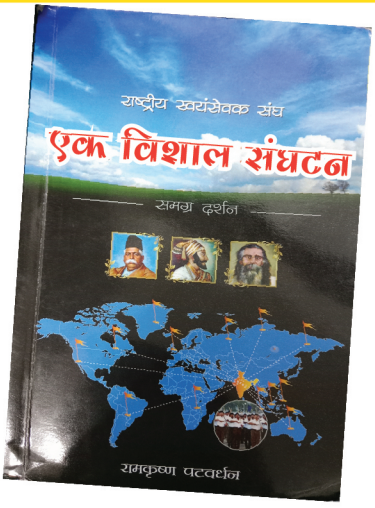

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi
A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्

दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक

सोने तारण कर्ज

जलद कर्ज

कमी प्रक्रिया शुल्क

व्याजदर

९.५०%* वार्षिक

* अटी व शर्ती लागू

TOLL FREE: 1800 233 1919 kalyanjanata.in KJSBank

भारतीय राजनीति में क्या बदलेगा!

राज्यसभा चुनाव

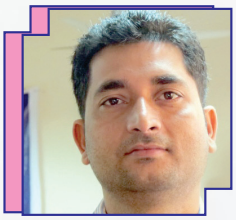

डॉ. संतोष झा

राज्यसभा चुनाव केवल प्रतिनिधियों के चयन तक सीमित नहीं रहते बल्कि वे देश की व्यापक राजनीतिक दिशा और शक्ति-संतुलन को भी प्रभावित करते हैं।

16 मार्च 2026 को सम्पन्न राज्यसभा चुनाव भारतीय संसदीय राजनीति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुए। बिहार, ओडिशा और हरियाणा की 11 सीटों पर हुए मतदान में क्रॉस वोटिंग, रणनीतिक अनुपस्थिति और दलगत अनुशासन में शिथिलता ने परिणामों को अप्रत्याशित दिशा दी। इन परिस्थितियों का सर्वाधिक लाभ भारतीय जनता पार्टी और उसके नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को मिला, जिसने अपने मूल गणित से दो अतिरिक्त सीटें प्राप्त कर राज्यसभा में स्पष्ट बहुमत की स्थिति को और सुदृढ़ कर लिया। इस चुनाव चक्र में देशभर की 37 सीटों में से 26 सीटें पहले ही निर्विरोध भर चुकी थीं, जबकि शेष 11 सीटों पर मुकाबला हुआ। इन्हीं सीटों पर हुए घटनाक्रम ने सत्ता संतुलन को निर्णायक रूप से प्रभावित किया।

बिहार इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण रहा। यहां एनडीए चार सीटों पर पहले से ही मजबूत स्थिति में था, किंतु पांचवीं सीट पर मुकाबला संतुलित था। ऐसे में महागठबंधन के कुछ विधायकों-विशेषकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल के अनुपस्थित रहने से स्थिति निर्णायक हो गई। चार विधायकों के मतदान से दूर रहने के कारण प्रभावी मतों की संख्या घट गई और जीत के लिए आवश्यक कोटा कम हो गया। इस बदले हुए गणित ने एनडीए के उम्मीदवार के लिए मार्ग आसान कर दिया, जिसे दूसरी प्राथमिकता के मतों का लाभ मिला और वह विपक्षी प्रत्याशी पर बढ़त बनाने में सफल रहा। परिणामस्वरूप, एनडीए ने बिहार की सभी पांच सीटों पर विजय प्राप्त कर पूर्ण वर्चस्व स्थापित किया। यह घटना इस तथ्य को रेखांकित करती है कि संसदीय चुनावों में केवल संख्याबल ही नहीं, बल्कि उपस्थिति और अनुशासन भी समान रूप से निर्णायक होते हैं।

ओडिशा में स्थिति और अधिक जटिल, किंतु राजनीतिक रूप से अर्थपूर्ण रही। यहां भारतीय जनता पार्टी की स्थिति दो सीटों तक सीमित मानी जा रही थी, किंतु बीजू जनता दल और कांग्रेस के कुछ विधायकों द्वारा क्रॉस-वोटिंग किए जाने से समीकरण बदल गए। लगभग 11 विधायकों ने पार्टी लाइन से हटकर मतदान किया, जिससे बीजेपी समर्थित उम्मीदवार को अप्रत्याशित बढ़त मिली। पहली वरीयता के मतों में बराबरी की स्थिति बनने के बाद दूसरी वरीयता के मत निर्णायक सिद्ध हुए और अंततः एनडीए समर्थित प्रत्याशी विजयी हुआ। हालांकि, हरियाणा राज्यसभा चुनाव 2026 के परिणाम कड़े राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के बीच सामने आए, जिसमें सत्तारूढ़ दल और विपक्ष को एक-एक

मार्च 2026 के राज्यसभा चुनाव परिणामों के बाद बिहार की राजनीति में संरचनात्मक परिवर्तन स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। नीतीश कुमार द्वारा राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के सभी उम्मीदवारों की जीत सुनिश्चित करना उनकी मजबूत राजनीतिक प्रबंधन क्षमता को दर्शाता है। साथ ही, उनका सक्रिय रूप से केंद्र की राजनीति की ओर बढ़ना राज्य की सत्ता-संरचना में संक्रमण का संकेत देता है। मुख्य मंत्री पद से सम्भावित त्यागपत्र उनके लम्बे 'सुशासन' युग के अंत का प्रतीक माना जा रहा है। इस बदलाव का सीधा असर गठबंधन के भीतर शक्ति-संतुलन पर पड़ा है, जहां भारतीय जनता पार्टी की स्थिति अधिक मजबूत होती दिख रही है। पहली बार बिहार में भाजपा नेतृत्व में सरकार बनने की संभावना, खासकर सम्राट चौधरी जैसे नेताओं के संदर्भ में, नई राजनीतिक दिशा तय कर सकती है। वहीं, जनता दल (यू) का प्रभाव राज्य स्तर पर कुछ कम हो सकता है।

सीट प्राप्त हुई। क्रॉस-वोटिंग की घटनाओं ने दलगत अनुशासन, राजनीतिक निष्ठा तथा रणनीतिक प्रबंधन की प्रभावशीलता पर महत्वपूर्ण प्रश्न खड़े किए।इन चुनावों के बाद राज्यसभा में शक्ति-संतुलन स्पष्ट रूप से एनडीए के पक्ष में झुक गया है। बीजेपी की संख्या 106 तक पहुंच गई है, जबकि एनडीए की कुल ताकत लगभग 139 हो गई है। 123 के बहुमत के आंकड़े के मुकाबले यह बढ़त सरकार को न केवल संख्यात्मक मजबूती प्रदान करती है, बल्कि उसे विधायी प्रक्रिया में अधिक आत्मनिर्भर भी बनाती है। इस बदली हुई स्थिति के व्यापक निहितार्थ हैं। सबसे पहले, केंद्र सरकार अब महत्वपूर्ण विधेयकों के पारित होने के लिए बाहरी समर्थन पर निर्भर नहीं रहेगी। इससे आर्थिक सुधारों, प्रशासनिक बदलावों और नीतिगत पहलों को गति मिलने की सम्भावना है। दूसरे, राज्यसभा में विधायी प्रक्रिया अधिक सुचारू हो सकती है, क्योंकि विपक्ष के विरोध या समर्थन की अनिश्चितता का प्रभाव सीमित हो जाएगा। तीसरे, यह परिणाम विपक्षी दलों के लिए गम्भीर आत्ममंथन का विषय है। बिहार में अनुपस्थिति और ओडिशा में क्रॉस-वोटिंग ने उनकी संगठनात्मक कमजोरी और समन्वय की कमी को उजागर कर दिया है। राजनीतिक दृष्टि से यह परिणाम एक स्पष्ट संदेश भी देता है कि एनडीए केवल संख्याबल के आधार पर ही नहीं, बल्कि बेहतर रणनीति, अनुशासन और अवसरों के प्रभावी उपयोग के कारण भी आगे है। वहीं, विपक्ष के लिए यह संकेत है कि यदि वह प्रभावी चुनौती प्रस्तुत करना चाहता है, तो उसे आंतरिक एकजुटता और राजनीतिक प्रबंधन को मजबूत करना होगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पंजीयन करें
पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

बैठक में राष्ट्र-चिंतन का महायज्ञ

यह सभा केवल संगठन की बैठक नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र के चिंतन का प्रतिबिंब है। स्वयंसेवक शाखाओं के माध्यम से चरित्र निर्माण, सेवा कार्यों तथा सामाजिक सद्भाव के लिए निरंतर कार्यरत हैं।

आशीष कुमार 'अंशु'

हरियाणा के समालखा (पट्टी कल्याणा) में 13 से 15 मार्च 2026 तक आयोजित अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा (एबीपीएस) राष्ट्र की चेतना और संगठन की दिशा निर्धारित करने वाली ऐतिहासिक बैठक रही। पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी और माननीय सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी के मार्गदर्शन में हुई इस तीन दिवसीय सभा ने शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों की प्रगति का समीक्षण किया तथा आगामी दिशा तय की। सभा में पूरे देश से लगभग 1,487 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। यह बैठक संघ की शाखा-विस्तार, गृह-सम्पर्क अभियान, हिंदू सम्मेलनों तथा पंच परिवर्तन की दिशा में समाज को जोड़ने वाले प्रयासों का जीवंत दर्शन प्रस्तुत करती है।

भारत माता के चरणों में समर्पण

13 मार्च को सभा का औपचारिक उद्घाटन पूज्यनीय सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी और सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी द्वारा भारत माता की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। मधव सृष्टि परिसर में आयोजित इस बैठक में सह सरकार्यवाह सी. आर. मुकुंद जी ने मीडिया से संवाद करते हुए बताया कि शताब्दी वर्ष में पूरे देश से 1,400 से अधिक प्रतिनिधियों की उपस्थिति अपेक्षित है। सभा की शुरुआत में हाल ही में दिवंगत हुई विभूतियों को श्रद्धांजलि दी गई। इनमें शिवकथा

वाचक सद्गुरु दास महाराज, पर्यावरणविद् माधव गाडगिल, पूर्व गृह मंत्री एवं लोकसभा अध्यक्ष शिवराज पाटिल, पर्यावरणविद् सालुमारदा थिम्मक्का, पुरातत्ववेत्ता के. एन. दीक्षित, महाराष्ट्र के पूर्व उप मुख्य मंत्री अजित पवार, अभिनेता धर्मेंद्र देवोल, तमिल फिल्म निर्माता ए. वी. एम. सारावणन, मिजोरम के पूर्व राज्यपाल स्वराज कौशल, शिक्षाविद् विनय हेगड़े, कम्युनिस्ट नेता आर. नल्लकन्नु तथा वरिष्ठ पत्रकार प्रफुल्ल गोविंदा बरुआ शामिल थे।

समाज का उत्साहवर्धक प्रतिसाद

शताब्दी वर्ष में दो प्रकार के कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं - एक संगठनात्मक विस्तार का, दूसरा समाज की रचनात्मक शक्तियों को एकत्र कर सद्भाव और सामाजिक सद्भावना बढ़ाने का। गृह सम्पर्क अभियान के अंतर्गत स्वयंसेवकों ने अब तक कुछ प्रांतों में ही 10 करोड़ से अधिक परिवारों और लगभग 3,90,000 गांवों तक पहुंच बनाई है। इन सम्पर्कों में जाति, वर्ग या समुदाय का कोई भेदभाव नहीं रखा गया। केरल का उदाहरण उल्लेखनीय है, जहां स्वयंसेवकों ने 55,000 से अधिक मुस्लिम परिवारों और 54,000 से अधिक ईसाई परिवारों तक पहुंच बनाई तथा सभी ने स्नेह और सम्मान के साथ स्वागत किया।

इसी क्रम में अब तक 36,000 से अधिक हिंदू सम्मेलन आयोजित किए गए हैं, जो नगरों, गांवों, आदिवासी क्षेत्रों और दूरस्थ इलाकों तक पहुंचे।

पू. सरसंघचालक जी का समाज-संपर्क

पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने राज्य राजधानियों तथा चार महानगरों में कार्यक्रमों के माध्यम से समाज से सीधा संवाद स्थापित किया। चार महानगरों के कार्यक्रमों में उन्होंने नागरिकों के 1,000 से अधिक प्रश्नों का उत्तर दिया। इन प्रश्नोत्तर सत्रों की कुल अवधि 20 घंटे से अधिक रही। यह संवाद संघ के चिंतन को समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने का सशक्त माध्यम बना।

शाखाओं में नया उत्साह

वार्षिक प्रतिवेदन के अनुसार पिछले वर्ष 51,740 स्थानों पर 83,129 शाखाएं संचालित थीं। अब यह संख्या बढ़कर 55,683 स्थानों पर 88,949 शाखाओं तक पहुंच गई है। एक वर्ष में 3,943 नए स्थानों का समावेश और 5,820 शाखाओं की वृद्धि हुई है। सप्ताहिक मिलन और मंडलियों की संख्या भी बढ़ी है। अंडमान, अरुणाचल प्रदेश, लेह तथा दूरस्थ आदिवासी क्षेत्रों में भी शाखाएं प्रारंभ हुई हैं। यह विस्तार मात्र संख्या नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चिंतन का विस्तार है।

राष्ट्रीय चिंतन और पंच परिवर्तन

सभा के समापन दिवस 15 मार्च को सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने मीडिया से संवाद में कहा कि संगठनात्मक विस्तार के साथ-साथ समाज में गुणवत्ता वृद्धि पर निरंतर कार्य हो रहा है। हिंदुत्व या भारतीयता कोई विचार मात्र नहीं, जीवन पद्धति है। पंच परिवर्तन के माध्यम से सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहित किया जा रहा है। समाज को जाति-पंथ की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर महान विभूतियों के योगदान को स्वीकार करना चाहिए।

उन्होंने वंदे मातरम् के 150वें वर्ष तथा संत शिरोमणि रविदास जी महाराज के 650वें जन्म वर्ष के कार्यक्रमों की जानकारी दी। आगामी वर्ष में 96 प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन नियोजित है, जिनमें 11 क्षेत्रीय और एक नागपुर में होगा। गौ-सेवा, ग्रामीण विकास, छत पर सब्जी उद्यान, देशी गाय के गोबर से खाद का उपयोग, हरित घर निर्माण, प्लास्टिक कम करना और जल संरक्षण जैसे संकल्पों पर जोर दिया गया।

संगठनात्मक विकेंद्रीकरण की दिशा

सभा में संगठनात्मक संरचना के विकेंद्रीकरण पर चर्चा हुई। प्रस्ताव है कि मौजूदा 46 प्रांतों के स्थान पर छोटे-छोटे संभाग बनाए जाएं, जिससे कार्य की गुणवत्ता और सुगमता बढ़े।

कार्यान्वयन के बाद 80 से अधिक संभाग हो सकते हैं। यह कदम संगठन को और अधिक प्रभावी तथा जमीनी स्तर पर मजबूत बनाएगा।

जाति विभाजन से मुक्ति में मीडिया की भूमिका

सरकार्यवाह जी ने कहा कि मीडिया को समाज में जाति विभेद मिटाने में सहयोग करना चाहिए। चुनावों में मतदाताओं की संख्या को जाति के आधार पर आंकना बंद होना चाहिए। राष्ट्रहित में सरकार के कूटनीतिक प्रयासों की सराहना की गई। संघ विश्व शांति और विकास का पक्षधर है।

किल्लत, कालाबाजारी व उपभोक्ता की अग्निपरीक्षा

रसोई गैस किल्लत की अफवाहों से जहां बाजार गर्म है वहीं कालाबाजारियों की पौ बारह है। आनन-फानन व डर के वातावरण में लोग दुगने-तीगुने मूल्यों पर सिलेंडर खरीद रहे है। महिलाएं भी चूल्हा-चौका छोड़ सिलेंडर की जुगाड़ में सड़कों पर देखी जा रही हैं।

ईरान और अमेरिका-इजरायल युद्ध के कारण रसोई गैस किल्लत की अफवाहों के बीच, भारत में कालाबाजारियों ने 1500 से 2,000 या तीन गुना तक में घरेलू सिलेंडर बेच डाले, ऐसी चर्चाएं आम हुईं। व्यावसायिक सिलेंडरों की राशनिंग और कुकिंग गैस सिलेंडरों की बुकिंग सीमा तथा दाम बढ़ने के बीच पैनिक बुकिंग, भ्रष्टाचार और प्रारम्भिक प्रशासनिक चूकों ने कालाबाजारी को बढ़ावा दिया, बाद में आवश्यक वस्तु अधिनियमम के अंतर्गत छापेमारी में विभिन्न राज्यों में रसोई गैस के जखीरे पकड़े गए। अभी भी धर-पकड़ जारी है। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने मुंडका स्थित एक गोदाम पर छापा मारकर 610 अवैध गैस सिलेंडर बरामद किए। यहां इंडेन, भारत गैस और एचपी के सिलेंडर अवैध रूप से जमा किए गए थे, ताकि बाजार में किल्लत पैदा कर उन्हें ऊंचे दामों पर बेचा जा सके। हापुड़ में समाजवादी पार्टी के एक स्थानीय नेता को सिलेंडर ब्लैक में बेचते हुए पकड़ा गया, उसके पास से 55 भरे सिलेंडर मिले। तिरुपति में एक अवैध गोदाम पर छापेमारी के दौरान 822 रसोई गैस सिलेंडर बरामद किए गए। सोशल मीडिया और स्थानीय समाचारों के अनुसार, जिस जगह से ये सिलेंडर बरामद हुए हैं, उसका सम्बंध एक कांग्रेस नेता से बताया जा रहा है। मुम्बई के वर्ली क्षेत्र में एचपी गैस के 5 किलो वाले 6 भरे और 58 खाली सिलेंडर, और सुपर गैस के 64 भरे हुए 4 किलो के व 19 भरे हुए 12 किलो के सिलेंडर बरामद हुए। इन छोटे सिलेंडरों को अवैध रूप से भरकर ऊंचे दामों पर बेचने की तैयारी थी।

बीकानेर में गैस किल्लत की अफवाह के बीच सिलेंडर 1,500 तक में बिकने का मामला प्रकाश में आया। जिसके बाद प्रशासन ने विजिलेंस यूनिट बनाई। जयपुर में अवैध रिफिलिंग के एक गिरोह को पकड़ा गया जो 5 किलो के छोटे सिलेंडर अवैध रूप से भर रहा था। गुरुग्राम, हरियाणा में तो सुनने में आया कि कालाबाजारियों ने 1,100 का सिलेंडर कथित तौर पर 4,500 से 5,000 तक में बेच डाला। मध्य प्रदेश, केरल और कर्नाटक सहित देश भर से कमोबेस, ऐसी ही सूचनाओं का आना अभी भी जारी है। भारत में रसोई गैस की किल्लत के पीछे भू-राजनीतिक तनाव, आयात बाधाएं और बाजार की जमाखोरी

रामेंद्र सिन्हा

जैसे कई गम्भीर कारण रहे हैं। भारत अपनी आवश्यकता का लगभग 60% एलपीजी आयात करता है। ईरान और इजरायल-अमेरिका के बीच बढ़ते संघर्ष के कारण होर्मुज जलडमरूमध्य समुद्री मार्ग से होने वाली सप्लाई बाधित हुई है। भारत मुख्य रूप से सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात से गैस आयात करता है, जहां युद्ध की स्थिति के

कारण जहाजों के आने-जाने में जोखिम और देरी हो रही है। भारत के पास एलपीजी के लिए कच्चा तेल जैसा बड़ा रणनीतिक भंडार नहीं है। वर्तमान भंडारण क्षमता केवल 14 से 22 दिनों की राष्ट्रीय खपत को कवर कर सकती है। सप्लाई में जरा सी भी देरी होने पर बैकअप स्टॉक कम होने के कारण बाजार में तुरंत दबाव अनुभव होने लगता है।

युद्ध के कारण गैस खत्म होने की अफवाहों ने उपभोक्ताओं के बीच डर पैदा किया, जिससे लोगों ने आवश्यकता न होने पर भी पैनिक बुकिंग शुरू कर दी। दूसरी ओर, अनेक स्थानों पर वितरकों और बिचौलियों ने ऊंचे दामों पर बेचने के लिए सिलेंडरों का अवैध स्टॉक जमा कर लिया, जिससे कृत्रिम किल्लत पैदा हुई। यही नहीं, ऑनलाइन बुकिंग के बावजूद डिलीवरी मैन हफ्तों तक नहीं आते। इस बीच, हर दिन उपभोक्ता को मोबाइल पर डिलेवरी को लेकर मैसेज भी आते रहते हैं। डीलर या गैस एजेंसी को शिकायत से कोई अंतर नहीं पड़ता है। तब, लोग लम्बी लाइनों में लगते हैं, जिससे समय और ऊर्जा दोनों की बर्बादी होती है। हाहाकार अलग मचता है।

सरकार ने आम घरों और अस्पतालों जैसे आवश्यक क्षेत्रों को प्राथमिकता दी है, जिसके कारण व्यावसायिक उपभोक्ताओं और होटलों के लिए गैस की भारी कमी हो गई है। दूसरी ओर, वैश्विक ऊर्जा लागत बढ़ने के कारण घरेलू सिलेंडर की कीमतों में मार्च 2026 में 60 और व्यावसायिक सिलेंडर में 115 तक की बढ़ोतरी हुई है। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए सरकार ने रिफाइनरियों को एलपीजी उत्पादन 25% तक बढ़ाने का निर्देश दिया है और अमेरिका, नॉर्वे व कनाडा जैसे अन्य देशों से आयात के विकल्प खोजे जा रहे हैं।

गैस की किल्लत और कालाबाजारी को रोकने के लिए त्रिस्तरीय रणनीति की आवश्यकता है। पहला, तकनीकी हस्तक्षेप अर्थात् हर सिलेंडर पर 'क्यूआर कोड' या 'स्मार्ट टैग' होना चाहिए ताकि उसके परिवहन पर दृष्टि रखी जा सके। दूसरा, कालाबाजारी करने वाली एजेंसियों का लाइसेंस तत्काल निरस्त होना चाहिए और उन पर भारी जुर्माना लगाया जाना चाहिए। और तीसरा, पाइपलाइन गैस (पीएनजी) के नेटवर्क को और तेजी से फैलाना चाहिए ताकि सिलेंडर की निर्भरता और उससे जुड़ी समस्याएं कम हों।

●●●

सरकार की एडवाइजरी और कदम

14 मार्च 2026 को जारी नए आदेश के अनुसार, जिन घरों में पीएनजी कनेक्शन है, वे अब सब्सिडी वाला एलपीजी सिलेंडर नहीं रख सकेंगे। उन्हें अपना एलपीजी कनेक्शन तुरंत सरेंडर करना होगा। घरेलू रसोई गैस का दूसरा सिलेंडर शहरी क्षेत्रों में, अब उपभोक्ता 25 दिन और ग्रामीण क्षेत्रों में 45 दिन के अंतराल पर ही बुक कर पाएंगे। लखनऊ के कुछ क्षेत्रों में एलपीजी सिलेंडर की किल्लत के समाचार के बीच समय सीमा से जुड़ी बातें मात्र अफवाहें हैं। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि पीएनजी इंफ्रास्ट्रक्चर पूरी तरह सक्रिय है और सप्लाई सामान्य है। भारत ने होर्मुज जलडमरूमध्य समुद्री मार्ग से अपने ऊर्जा जहाजों की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए ईरान और अन्य क्षेत्रीय देशों के साथ कूटनीतिक प्रयास तेज किए हैं। इसी के चलते 2 प्रमुख एलपीजी टैंकर 'एमटी नंदा देवी' और 'शिवालिक' कतर से लगभग 92,700 मीट्रिक टन एलपीजी तथा एक अन्य टैंकर लगभग 1.35 लाख मीट्रिक टन कच्चा तेल लेकर सुरक्षित रूप से जलडमरूमध्य पार करके भारत पहुंच चुके हैं। अभी भी लगभग 20 से 28 भारतीय ध्वज वाले जहाज फारस की खाड़ी क्षेत्र में मौजूद हैं, जिनमें से कई सुरक्षित मार्ग की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

पितांबरी® ॲग्रो टूरिज्म

चलो घूमने दुनिया की सैर करने !

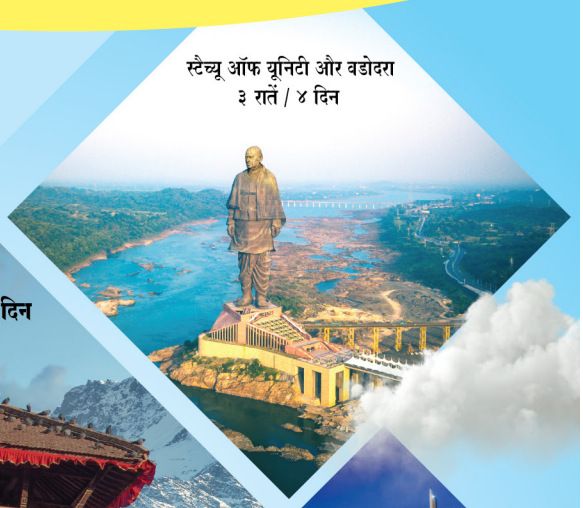
स्टैच्यू ऑफ यूनिटी और वडोदरा
३ रातें / ४ दिन

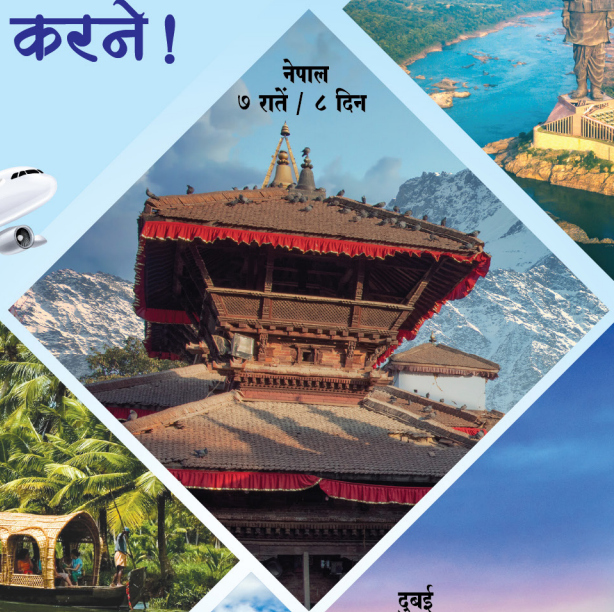
नेपाल
७ रातें / ८ दिन

केरल
४ रातें / ५ दिन

हंपी बदामी
५ रातें / ६ दिन

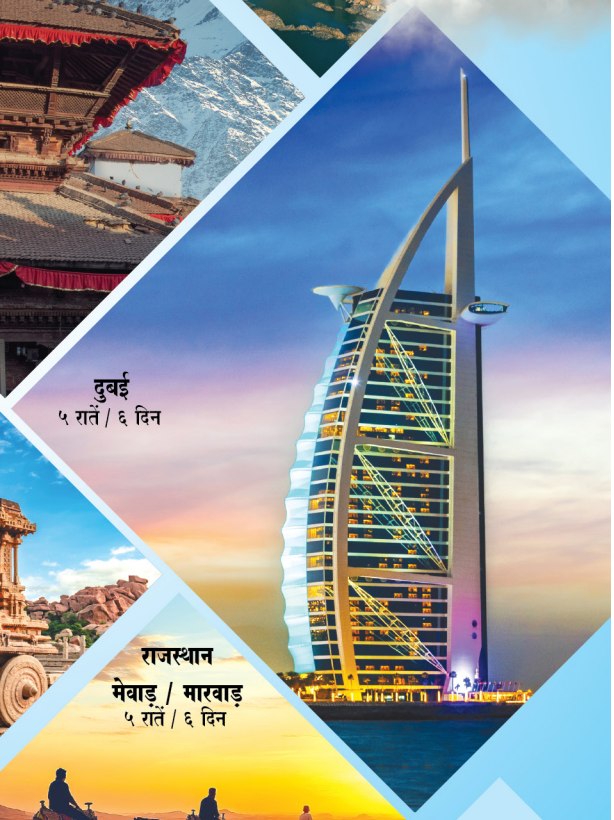
दुबई
५ रातें / ६ दिन

राजस्थान
मेवाड़ / मारवाड़
५ रातें / ६ दिन

टूर में शामिल :

- एसी बस / गाड़ी में सफर और स्थानीय पर्यटन स्थलों की सैर
- ठहरने के लिए प्रीमियम होटल्स
- स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था
- जानकार गाइड और सभी प्रवेश टिकट

अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए संपर्क :
8828913131, 8657968481, 8530015838,
9702963400, 8657307352

दीपक कुमार द्विवेदी

सोशल मीडिया के दुरुपयोग पर टेढ़ी दृष्टि

भारत में आज लगभग 35 करोड़ से अधिक लोग सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं और यह संख्या निरंतर बढ़ रही है। औसतन एक व्यक्ति प्रतिदिन 2 से 3 घंटे इस आभासी दुनिया में बिताता है। यह केवल समय का व्यय नहीं है, यह वह समय है जिसमें हमारी सोच बनती है, हमारी प्रतिक्रियाएं तय होती हैं और कई बार हमारे निर्णय भी प्रभावित होते हैं। यही कारण है कि सोशल मीडिया अब केवल एक तकनीकी सुविधा नहीं, बल्कि एक सामाजिक शक्ति बन चुका है।

यहीं से एक आवश्यक प्रश्न जन्म लेता है क्या इस शक्ति की कोई जवाबदेही है? यह प्रश्न इसलिए महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति को जितना आसान बनाया है, उतना ही अनियंत्रित भी कर दिया है। कोई भी व्यक्ति बिना प्रमाण किसी पर आरोप लगा सकता है, किसी की छवि को क्षति पहुंचा सकता है

और यह सब कुछ कुछ ही क्षणों में लाखों लोगों तक पहुंच जाता है। बाद में सत्य सामने भी आ जाए, तो भी जो नुकसान होना होता है, वह हो चुका होता है। महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री देवेंद्र फडणवीस ने जब यह कहा कि सोशल मीडिया पर फैल रही मानहानि और चरित्रहनन की प्रवृत्तियों पर रोक लगाने के लिए पुलिस महानिदेशक के नेतृत्व में एक समिति बनाई जाएगी, तो यह केवल एक प्रशासनिक घोषणा नहीं थी, बल्कि यह मान लेना था कि समस्या अब अनदेखी करने लायक नहीं रहे।

फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स, यूट्यूब, थ्रेड्स, व्हाट्सएप और स्नैपचैट जैसे प्लेटफॉर्म धीरे-धीरे हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन गए हैं। यदि सही तरीके से उनका उपयोग किया, तो वे समाज को जोड़ने और आगे बढ़ाने का माध्यम बनेंगे, अन्यथा वे विभाजन और भ्रम के साधन भी बन सकते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में यह बहुत सामान्य हो गया है कि किसी के बारे में बिना किसी ठोस आधार के बातें फैला दी जाती हैं। कभी आरोप के रूप में, कभी वीडियो के रूप में, तो कभी किसी कथित 'सूत्र' के हवाले से। और यह सब इतनी तेजी से फैलता है कि सच सामने आने तक नुकसान हो चुका होता है। ऐसे में यह सवाल स्वाभाविक है कि क्या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अर्थ यह है कि किसी की प्रतिष्ठा को इस तरह दांव पर लगा दिया जाए?

लोकतंत्र में बोलने का अधिकार निस्संदेह आवश्यक है, लेकिन उतना ही आवश्यक यह भी है कि उस अधिकार के साथ जिम्मेदारी जुड़ी रहे। यदि स्वतंत्रता का उपयोग किसी को अपमानित करने या बदनाम करने के लिए होने लगे, तो फिर उस पर विचार करना ही पड़ेगा। मुख्य मंत्री फडणवीस की यह पहल उसी दिशा में एक संकेत है कि अब सोशल मीडिया को पूरी तरह खुला मैदान मानकर नहीं छोड़ा जा सकता, वहां भी कुछ सीमाएं और उत्तरदायित्व तय करने होंगे।

राज्यसभा में मिलिंद देवड़ा ने जो बात उठाई, उन्होंने सीधे-सीधे यह सवाल

उठाया कि क्या सोशल मीडिया कम्पनियां केवल मंच भर हैं, या फिर उनकी भी कोई जिम्मेदारी बनती है विशेषतौर पर तब, जब उसका असर बच्चों और किशोरों पर पड़ रहा हो। उन्होंने गाजियाबाद की उस घटना की चर्चा भी की, जिसमें तीन किशोर बहनों ने आत्महत्या कर ली। ऐस सनाचार पढ़ते समय हम अधिकतर आगे बढ़ जाते हैं, लेकिन जब कोई जनप्रतिनिधि उसे सदन में उठाता है, तो लगता है कि यह केवल एक घटना नहीं, बल्कि एक संकेत है-कुछ ठीक नहीं चल रहा है। ऑनलाइन खेलों की लत, मोबाइल पर लगातार बने रहना, आभासी दुनिया में अपनी पहचान ढूंढना ये सब मिलकर बच्चों के भीतर एक ऐसा दबाव बना रहे हैं, जिसे वे समझ भी नहीं पा रहे और कह भी नहीं पा रहे हैं। मिलिंद देवड़ा ने यह भी कहा कि आज बड़ी संख्या में किशोर ऐसे हैं, जिनमें सोशल मीडिया की लत साफ दिखाई देती है। यह बात कोई आंकड़ा पढ़कर समझने वाली नहीं है, यह हम प्रतिदिन अपने आसपास देख सकते हैं बात करते हुए भी ध्यान फोन पर, पढ़ते हुए भी मन भटका हुआ, और थोड़ी सी तुलना से ही खुद को कमतर अनुभव करना। पढ़ाई पर असर पड़ रहा है, आत्मविश्वास कमजोर हो रहा है, और एक तरह की बेचैनी भीतर बसती जा रही है। उन्होंने एक सर्वे का हवाला देते हुए कहा कि बड़े शहरों में करीब 33 प्रतिशत बच्चे साइबर उत्पीड़न झेल रहे हैं। यह सोचकर ही असहजता होती है कि जिस आयु में बच्चों को सुरक्षित और सहज अनुभव करना चाहिए, उसी उम्र में वे अदृश्य दबाव और डर के बीच जी रहे हैं। राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो के आंकड़े भी उन्होंने रखे। 2016 में किशोरों से जुड़े हिंसक अपराध 32 प्रतिशत थे, जो 2022 तक बढ़कर लगभग 50 प्रतिशत हो गए। यह बढ़ोतरी अचानक नहीं होती, इसके पीछे लम्बे समय से चल रहा बदलाव होता है। उन्होंने यह भी बताया कि फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया जैसे देश इस दिशा में कदम उठा चुके हैं, और कुछ अन्य देश भी सोच रहे हैं कि बच्चों के सोशल मीडिया उपयोग को कैसे सीमित किया जाए। भारत में भी अभिभावकों की सहमति जैसी बातें नियमों में हैं, लेकिन उन्होंने साफ कहा कि केवल कागज पर नियम बना देने से कुछ नहीं बदलेगा, जब तक कम्पनियां खुद अपनी जिम्मेदारी नहीं समझेंगी।

हाल के वर्षों में डीपफेक जैसी तकनीकों का दुरुपयोग देखा है। 2024 के लोकसभा चुनाव के दौरान अमित शाह और नरेंद्र मोदी से जुड़े नकली वीडियो प्रसारित हुए। यह केवल तकनीकी प्रयोग नहीं था, बल्कि यह इस बात का संकेत था कि आने वाले समय में सत्य और असत्य के बीच अंतर करना कितना कठिन हो सकता है।

अब इस पूरी स्थिति में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने एक नई जटिलता जोड़ दी है। फरवरी 2026 में आयोजित 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट' में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने स्पष्ट कहा कि यह समय तकनीक के उपयोग की दिशा तय करने का है। एआई अब केवल सुविधा नहीं, बल्कि शक्ति बन चुका है। यदि इसका उपयोग सही दिशा में किया जाए, तो यह मानव जीवन को बेहतर बना सकता है; लेकिन यदि यह अनियंत्रित रहा, तो इसके परिणाम गम्भीर हो सकते हैं।

वैश्विक स्तर पर भी इस समस्या को समझा जा रहा है। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने बच्चों की ऑनलाइन सुरक्षा पर चिंता व्यक्त करते हुए सोशल मीडिया उपयोग को सीमित करने की बात कही है। ऑस्ट्रेलिया ने 16 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए सोशल मीडिया प्रतिबंध लागू किया है। यूरोप में डिजिटल सर्विसेज एक्ट जैसे कानून प्लेटफॉर्म को उनकी सामग्री के लिए जिम्मेदार बना रहे हैं। भारत में भी सूचना प्रौद्योगिकी नियम, 2021 और डिजिटल डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023 लागू किए गए हैं, जिनके अंतर्गत आपत्तिजनक सामग्री हटाने और डेटा सुरक्षा सुनिश्चित करने के प्रावधान हैं।

केवल विधि-निर्माण से ही समस्या का समाधान संभव नहीं है। सोशल मीडिया की प्रकृति ही ऐसी है कि वह अंततः समाज के सामूहिक व्यवहार का प्रतिबिंब बन जाती है। यदि हमारे भीतर संयम, विवेक और उत्तरदायित्व का भाव नहीं होगा, तो कोई भी मंच स्वयं संयमित नहीं रह सकता। यह समझना आवश्यक है कि प्रत्येक पोस्ट, प्रत्येक टिप्पणी और प्रत्येक साझा की गई सामग्री मात्र सूचना नहीं होती, वह किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा, मनःस्थिति और जीवन पर प्रत्यक्ष प्रभाव डाल सकती है।

भारतीय चिंतन में वाणी के संयम को सदैव अत्यंत महत्त्व दिया गया है। सत्यं ब्रूयात्, प्रियं ब्रूयात यह केवल शास्त्रों का महावाक्य नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन को संतुलित रखने का मूल सिद्धांत है। यदि यही दृष्टि हमारे डिजिटल व्यवहार में उतर आए, तो निश्चय ही सोशल मीडिया का स्वरूप अधिक स्वस्थ, संवेदनशील और मानवीय बन सकता है।

यह प्रश्न तकनीक का नहीं, मनुष्य का है। सोशल मीडिया और एआई दोनों ही साधन हैं।

एक सामाजिक संतुलन
धर्मांतरण और विवाह कानून

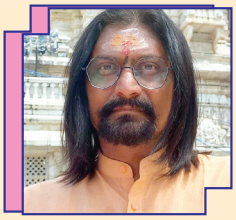

डॉ. ईलेवान ठाकर

महाराष्ट्र में धर्मांतरण को लेकर सख्त कानून लागू करने और गुजरात में प्रेम विवाह के लिए माता-पिता के हस्ताक्षर अनिवार्य करने जैसे कदम सामाजिक, सांस्कृतिक और कानूनी दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माने जा रहे हैं।

पिछले कुछ समय में ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जिनमें लोगों को आर्थिक लालच, सामाजिक दबाव या झूठी पहचान के आधार पर धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित किया गया। इन घटनाओं ने समाज में असुरक्षा और अविश्वास का वातावरण पैदा किया है। विशेष रूप से कमजोर वर्गों और युवाओं को निशाना बनाए जाने की आशंका ने इस विषय को और अधिक संवेदनशील बना दिया है। ऐसे में महाराष्ट्र सरकार द्वारा सख्त धर्मांतरण कानून लागू करने का निर्णय एक आवश्यक कदम माना जा सकता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा के विरुद्ध या धोखे से धर्म परिवर्तन न करे।

दूसरी ओर, गुजरात सरकार द्वारा लव मैरिज के लिए माता-पिता के हस्ताक्षर अनिवार्य करने का प्रस्ताव भी व्यापक चर्चा का विषय बना हुआ है। सामान्यतः विवाह को दो वयस्क व्यक्तियों का निजी निर्णय माना जाता है, जिसमें उन्हें अपने जीवनसाथी चुनने की पूरी स्वतंत्रता होती है। भारतीय सामाजिक संरचना में विवाह केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो परिवारों का भी सम्बंध होता है। इस कारण परिवार की सहमति और सहभागिता को महत्वपूर्ण माना जाता है।

कई मामलों में यह देखा गया है कि युवा भावनात्मक प्रभाव में आकर जल्दबाजी में निर्णय ले लेते हैं, जिनके परिणाम बाद में गम्भीर हो सकते हैं। इसके अलावा कुछ मामलों में झूठी पहचान या गलत जानकारी देकर विवाह करने की घटनाएं भी सामने आई हैं। ऐसे में माता-पिता की सहमति को अनिवार्य करना एक प्रकार से सुरक्षा और पारदर्शिता सुनिश्चित करने का प्रयास माना जा सकता है।

हालांकि, इन दोनों ही निर्णयों के साथ एक महत्वपूर्ण प्रश्न जुड़ा हुआ है-व्यक्तिगत स्वतंत्रता का। लोकतांत्रिक देश में हर वयस्क को अपने जीवन से जुड़े निर्णय लेने का अधिकार है। इसलिए यह आवश्यक है कि ऐसे कानून बनाते समय संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का पूरा सम्मान किया जाए।

अंततः कहा जा सकता है कि धर्मांतरण और विवाह जैसे विषय अत्यंत संवेदनशील हैं, जिनमें संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। सरकार के इन कदमों का उद्देश्य यदि सामाजिक सुरक्षा और पारदर्शिता बढ़ाना है, तो उनका स्वागत किया जाना चाहिए। लेकिन साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होगा कि इन कानूनों का उपयोग निष्पक्ष और जिम्मेदारीपूर्वक हो, ताकि किसी भी व्यक्ति के अधिकारों का हनन न हों।

कई मामलों में यह देखा गया है कि युवाओं को बहला-फुसलाकर या झूठी पहचान के जरिए विवाह किया जाता है, जिसे बाद में लव जिहाद जैसे विवादित शब्दों से जोड़ा जाता है। ऐसे मामलों को रोकने के लिए सरकार का यह कदम एक सुरक्षात्मक उपाय के रूप में देखा जा सकता है। माता-पिता की सहमति से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि विवाह पूरी पारदर्शिता और सामाजिक स्वीकृति के साथ हो।

यदि हम व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखें, तो यह कानून सामाजिक संतुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक प्रतीत होते हैं। हालांकि, इन कानूनों को लागू करते समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संवैधानिक अधिकारों का भी पूरा ध्यान रखना आवश्यक है।

धर्मांतरण कानून का उद्देश्य किसी की धार्मिक स्वतंत्रता को बाधित करना नहीं होना चाहिए, बल्कि यह सुनिश्चित करना होना चाहिए कि कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा के विरुद्ध धर्म परिवर्तन न करे। इसी प्रकार, विवाह के मामलों में माता-पिता की भूमिका महत्वपूर्ण है, लेकिन यह भी आवश्यक है कि वयस्कों के व्यक्तिगत अधिकारों का हनन न हो।

इन कानूनों के लागू होने के बाद निश्चित रूप से धर्मांतरण के मामलों में पारदर्शिता आएगी। जो लोग धोखे या दबाव के माध्यम से धर्म परिवर्तन कराते थे, उनके लिए यह आसान नहीं रहेगा। प्रशासनिक निगरानी और कानूनी प्रक्रिया के कारण ऐसे मामलों में कमी आने की सम्भावना है।

लव मैरिज के संदर्भ में भी यह कानून एक प्रकार की जांच प्रक्रिया की तरह काम करेगा। इससे जल्दबाजी में लिए गए निर्णयों पर अंकुश लगेगा और परिवार की सहमति से विवाह होने की सम्भावना बढ़ेगी। हालांकि, यह भी ध्यान देने योग्य है कि केवल कानून बना देने से पूरी तरह से समस्याओं का समाधान नहीं होता। इसके लिए समाज में जागरूकता और शिक्षा भी उतनी ही आवश्यक है।

इन कानूनों का सबसे बड़ा सकारात्मक प्रभाव यह हो सकता है कि समाज में जागरूकता बढ़ेगी। लोग अधिक सतर्क रहेंगे, अपने बच्चों के निर्णयों पर ध्यान देंगे और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की जानकारी प्रशासन को देंगे।

युवाओं के लिए भी यह आवश्यक है कि वे जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय सोच-समझकर लें। प्रेम और विवाह जैसे विषयों में भावनाओं के साथ-साथ विवेक का होना भी आवश्यक है।

जहां एक ओर यह कानून सामाजिक सुरक्षा को मजबूत करने का प्रयास हैं, वहीं दूसरी ओर इनके दुरुपयोग की आशंका भी बनी रहती है। यदि इन कानूनों का गलत तरीके से प्रयोग किया गया, तो यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक सौहार्द को प्रभावित कर सकता है। इसलिए सरकार और प्रशासन की जिम्मेदारी है कि इन कानूनों को निष्पक्ष और संतुलित तरीके से लागू करें, ताकि किसी भी वर्ग के साथ अन्याय न हो।

महिला मीडियाकर्मियों के लिए विशेष कार्यक्रम का आयोजन

विश्व संवाद केंद्र पुणे फाउंडेशन की ओर से विश्व महिला दिवस पर महिला मीडियाकर्मियों ने लिए एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार स्वाती राजे, कल्याणी सरदेसाई, ईशान्य भारतात (पूर्वांचल) कार्यरत सेवाव्रती अलका वैद्य आणि वीणा बेडेकर से बातचीत की गई। पूर्व सीमा विकास प्रतिष्ठान की कार्यकर्ता श्रुती मेहता और विश्व संवाद केंद्र की सम्पादक अंजली तागडे उपस्थित लोगों को सम्बोधित किया। पत्रकार स्वाती राजे ने बताया कि मैं 1987 में पत्रकारिता शुरु की थी। उस समय शायद मैं पूर्णकालिक पत्रकार के रुप में काम करने वाली पहली महिला थी। एक पत्रकार के रुप में 14 साल तक मुझे मोबाइल फोन नहीं मिला , फिर भी हर खबर से मेरा ज्ञान बढ़ता गया। सम्पादकीय दृष्टिकोण ने मेरी आगे की यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्होंने बताया कि स्कूलों से भाषा धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है, इसलिए स्कूलों में भाषा के प्रति जागरुकता पैदा करना आवश्यक है।

कल्याणी सरदेसाई ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि राष्ट्र के रुप में हमारी योजनाओं में बच्चों को प्राथमिकता नहीं दी जाती विश्व संवाद केंद्र के अध्यक्ष अभय कुलकर्णी ने कार्यक्रम की प्रस्तावना दी व सम्राट कदम ने उपस्थित अतिथियों का आभार प्रकट किया।

बीते दिनों पुणे विभागीय कार्यालय में लोकमान्य मल्टिपर्पज को-ऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड ने अपना 10वां स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस दौरान बजाज जनरल इंश्योरेंस के साथ सांमजस्य करार भी किया गया। इस समय बजाज जनरल इंश्योरेंस के क्षेत्रीय विपणण अधिकारी श्रीपाद देऊळगावकर व विपणण अधिकारी नितीन पाटील भी उपस्थित थे। इस अवसर पर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाली महिलाओं का लोकमान्य सोसायटी की ओर से सम्मानित भी किया गया। लोकमान्य सोसायटी की संस्थापक अध्यक्ष डॉ. किरण ठाकूर के हाथों निरुपमा भावे, निकिता लोणकर, संगीता मावळे, शर्विका राऊत, नीलम एदलाबादकर, सुवर्णा दारवटकर आदि महिलाओं को सम्मानित भी किया गया।

छत्रपति सम्भाजीनगर। श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ आयोजन समिति द्वारा विगत दिवस रविवार को दशम स्कंध निरुपित हवन के साथ श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का समापन किया गया। उक्त कार्यक्रम बीड बॉयपास स्थित अरुणोदय कॉलोनी में उमेश भालगांवकर के घर पर आयोजित किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष प्रकाश कुलकर्णी, उपाध्यक्ष उमेश भालगावकर, सर्वोत्तम पाथरीकर, कार्याध्यक्ष श्रीनिवास पाथरीकर व धनंजय ब्रम्हपूरकर, योगेश भोसले सहित सभी समिति सदस्य व सेवा प्रमुख बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

TJSB SAHAKARI BANK LTD. MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

Need funds, fast?

With **TJSB Personal Loan** help is just a few steps away.

Get a Personal Loan with a simple process, minimal paperwork, & quick disbursal.

Up to
₹5 Lakhs

For salaried, professionals & businessmen

*T&C Apply

www.tjsb.bank.in | ✆ : 022-48897204